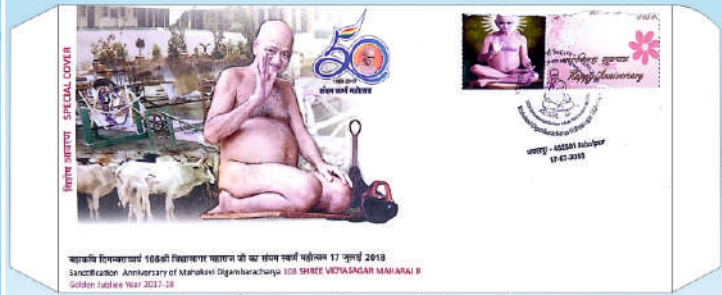


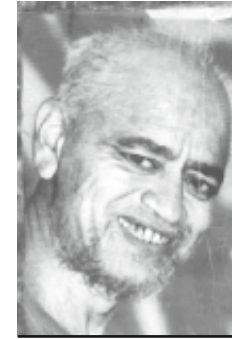
इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभावसागरजी एवं पुण्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देखें व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	तिथीकर कल्याणक
16	शनिवार	तृतीया	धनिष्ठा	23 जुलाई: भगवान कुशुनाथ जी गर्भ कल्याणक
17	रविवार	चतुर्थी	शतभिषा	30 जुलाई: भगवान सुमतिनाथ जी गर्भ कल्याणक
18	सोमवार	पंचमी	पूर्वाभाद्रपद	03 अगस्त: भगवान नमिनाथ जी जन्म-तप कल्याणक
19	मंगलवार	षष्ठी	उत्तराभाद्रपद	04 अगस्त: भगवान पार्श्वनाथ जी मोक्ष कल्याणक
20	बुधवार	सप्तमी	रेवती	11 अगस्त: भगवान श्रेयासनाथ मोक्ष कल्याणक
21	गुरुवार	अष्टमी	अश्विनी	
22	शुक्रवार	नवमी	मरुणी	
23	शनिवार	दशमी	कृत्तिका	
24	रविवार	एकादशी	रोहिणी	17 जुलाई: रवि व्रत
25	सोमवार	द्वादशी	मृगशिरा	24 जुलाई: रोहिणी व्रत
26	मंगलवार	त्रयोदशी	आर्द्रा	24 जुलाई: रवि व्रत
27	बुधवार	चतुर्दशी	पुनर्वसु दि/रा	29 जुलाई: सप्तम परम स्थान व्रत प्रारंभ
28	गुरुवार	अमावस	पुनर्वसु	04 अगस्त: सप्त परम स्थान व्रत पूर्ण, मोक्ष सागमी, रवि व्रत
29	शुक्रवार	प्रतिपदा	पुष्य	07 अगस्त: सौभाग्य दशमी, कलश दशमी, अक्षय तिथि दशमी
30	शनिवार	द्वितीया	आश्लेषा	09 अगस्त: श्रावण द्वादशी
31	रविवार	तृतीया	मघा	11 अगस्त: कर्म निर्जरा व्रत, श्रमण संस्कृति रक्षक दिवस, मेघमाला व्रत प्रारंभ, रक्षाबंधन
				12 अगस्त: षोडशकारण व्रत प्रारंभ
दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	सर्वाथ सिद्धि
1	सोमवार	चतुर्थी	पूर्वाफाल्गुनी	19 जुलाई: 05/52 बजे से 12/12 बजे तक।
2	मंगलवार	पंचमी	उत्तराफाल्गुनी	21 जुलाई: 05/53 बजे से 14/17 बजे तक।
3	बुधवार	षष्ठी	हस्त	23 जुलाई: 19/03 बजे से 29/54 बजे तक।
4	गुरुवार	सप्तमी	चित्रा	25 जुलाई: 05/55 बजे से 25/06 बजे तक।
5	शुक्रवार	अष्टमी	स्वाती	28 जुलाई: 05/56 बजे से 29/56 बजे तक।
6	शनिवार	नवमी	विशाखा	03 अगस्त: 05/59 बजे से 18/24 बजे तक।
7	रविवार	दशमी	अनुराधा	14 अगस्त: 21/56 बजे से 30/03 बजे तक।
8	सोमवार	एकादशी	ज्येष्ठा	
9	मंगलवार	द्वादशी	मूल	
10	बुधवार	त्रयोदशी	पूर्वाषाढ़	
11	गुरुवार	चतुर्दशी/पूर्णिमा	उत्तराषाढ़	
12	शुक्रवार	प्रतिपदा	धनिष्ठा	
13	शनिवार	द्वितीया	शतभिषा	
14	रविवार	तृतीया	पूर्वाभाद्रपद	
15	सोमवार	चतुर्थी	उत्तराभाद्रपद	
दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	शुभ मुहूर्त
				दुकान प्रारंभ: जुलाई-20,21,24 अगस्त-3,4,7
				मशीनरी प्रारंभ: जुलाई-16,20,21,29 अगस्त-3,4,8
				वाहन खरीदने: जुलाई-16,20,21,25,29
				अगस्त - 3,5,12,13



संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 280 • जुलाई 2022

• वीर नि.संवत् 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

- गुरुपूर्णिमा दिगम्बर जैन आम्नाय के परिप्रेक्ष्य में 08
- क्या है वीरशासन जयंती 11
- समयसार में प्रतिपादित व्यवहार नय की प्रयोजनीयता 15
- परोपकार मानवता का दूसरा नाम 18
- युवा पीढ़ी उगता सूरज देखना भूल गयी 21
- मूकमाटी: एक जीवन दृष्टि 24
- फुटकर व्यापार का रचनात्मक विनाश 27
- दूसरे के सुख से दुखी क्यों ? 29
- माँ बचाओ अभियान चलाना समय की आवश्यकता 31
- बारह भावना का चिंतन क्यों ? 44
- वायु विकार, अम्ल गैस एवं एसीडिटी 50
- वरिष्ठ नागरिक: अकेले पन से बचें और सकारात्मक सोच रखें 52
- विवाह पूर्ण फिल्मांकन भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों पर कुठाराघात 55
- आलोचना दोष जानने का श्रेष्ठ माध्यम 57
- ननद-भाभी पी.एच.डी उपाधि अलंकृत 58
- दांतों की देखभाल बचपन से पचपन तक 59

बाल कहानी

- अनहोनी न होय 62

कविता

- दिल के फफोले 10
- हिन्दी भाष्य विधाता 13
- खुशी का एक रास्ता 16
- लिखो-लिखो 20
- कितना तूफान मचाया है प्रलय के इशारों ने 23
- महिमा है जिनबिम्ब की 28
- करुणा की पहचान है वीरो 53
- बचपन 56

कहानी

- जब जब आँख से निकले आँसू 46

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
- चलो देखें यात्रा : 17 • आगम दर्शन : 33 • माथा पच्ची : 34 • पुराण प्रेरणा : 35 • कैरियर गाइड : 36
- दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये : 42 • दिशा बोध : 43
- वरिष्ठ नागरिक : 52 • हमारे गौरव : 54 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 61
- बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की
स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : 2100/- (15 वर्ष)
-संरक्षक : 5001/- (सदैव)
-परम सम्माननीय : 11000/- (सदैव)
-परम संरक्षक : 15001/- (सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक -ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)



में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर -10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर के अंक में नकली बेटा कहानी को पढ़ा धोखाधड़ी के आये दिन कारनामे सुनने मिलते रहते हैं लेकिन किसी धोखाधड़ी पर चालीस साल बाद न्याय मिला हो यह पहली बार सुना है कहानी का केन्द्र मर्मस्पर्शी है भाषा सरल सुबोध और शैली प्रांजल है कथा वस्तु पठनीय और मननीय है इस कहानी के माध्यम से समाज को एक शिक्षा लेना चाहिये कि किसी का विश्वास करने से पहले तथ्यों की परीक्षा अवश्य कर लेना चाहिये आँख बन्द करके किसी का विश्वास करना घातक ही होता है धोखा देने वाले प्रायः इससे साधु का भेष बनाकर ही धोखा देते हैं इससे साधु का भेष कुछ समय के लिये अविश्वसनीय हो जाता है। नकली बेटा कहानी में साधु के भेष का दुरुपयोग किया गया है आज भी साधु का भेष बनाकर के लोग अवांछनीय लाभ ले रहे हैं इस प्रवृत्ति को रोकना हम सबकी जिम्मेदारी है यदि साधु भेष के दुरुपयोग को नहीं रोका गया तो आम आदमियों की साधुओं के प्रति आस्था समाप्त हो जायेगी इससे भारतीय संस्कृति को गंभीर चोट पहुँचेगी।

चेतन जैन, छिहारी

• सम्पादक महोदय, आचार्य भगवन ज्ञानसागर जी महाराज कहा करते थे कि जिसके हाथ में पुस्तक है वही विद्वान है अथवा विद्वान वही कहलाता है जिसके हाथ में हमेशा पुस्तक या ग्रंथ होता है आज हमारे परिवार व मंदिरों में जिनवाणी का बोझ मानकर जिनवाणी को बाहर निकाला जा रहा है जबकि



जिनवाणी के बिना श्रुत अराधना संभव नहीं है और श्रुत अराधना को भूल करके सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती है क्योंकि तत्त्वार्थ का श्रद्धान करके ही सम्यग्दर्शन होता है और तत्त्वार्थ का श्रद्धान प्राप्त करने के लिये जिनवाणी का अभ्यास जरूरी होता है जिनेन्द्र भगवान के वचनों के माध्यम से ही मिथ्यात्व रूपी अंधकार नष्ट होता है अध्यात्म सिद्धांत, आगम, काव्य, पुराण, गणित, इतिहास भाषा-विज्ञान, मनोविज्ञान, संगीत, आयुर्वेद और वास्तुकला शिल्प शैली विपुल मात्रा में उपलब्ध है यदि मन्दिरों में लाइब्रेरी का निर्माण किया जायेगा तो श्रमण संस्कृति की सुरक्षा सहज और सरल हो जायेगी।

बाहुबलि जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, विगत माह मुख्यमंत्री और उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों के सम्मेलन को संबोधित करते हुये देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि न्याय त्वरित और सुलभ बनाने के लिये न्यायालय और उच्च न्यायालय कि न्याय प्रक्रिया की भाषा स्थानीय होना चाहिये अब यदि प्रधानमंत्री जी के आशय को समझा जाये तो व्यवहारिक दृष्टि से उनका विचार काफी गंभीर है क्योंकि अंग्रेजी में न्याय प्रक्रिया होने से वादी और प्रतिवादी दोनों को ही न्याय प्रणाली समझ में नहीं आती है और वे वकीलों पर निर्भर रहते हैं उनकी आत्मीयता न्याय से नहीं जुड़ पाती है ओर वे न्याय का महत्व नहीं समझ पाते हैं इससे न्याय में त्वरितता और सुलभता का अभाव हो जाता है इससे न्याय के स्थान पर अन्याय होता है।

पंकज जैन, इंदौर

भक्ति तरंग शिवपुर की लगन



हो प्रभुजी, म्हारो छै नादानी
मनड़ो ॥ टेक ॥

हूं ल्यावत तुम पद सेवन कौं,
यौ नहिं आवत है
बगड़ों जी ॥ हो ॥1॥

याकौ सुभाव सुधारि दयानिधि,
माचि रह्यो मोटो
झगड़ों जी ॥ हो ॥2॥
बुधजन की विनती सुन लीजे,
कहजे शिवपुर को
उमड़ो जी ॥ हो ॥3॥



हे प्रभु ! यह मेरा मन नादान ना समझ है, चंचल है। मैं बार-बार इसको आपके चरणों की भक्ति में लगाना चाहता हूँ, पर यह इसके लिये आता ही नहीं, तैयार ही नहीं होता, यह हठी हो रहा है, बिगड़ रहा है, कुटेव (खराब आदतों) में लगा हुआ है।

हे कृपा निधान मेरे मन का यह स्वभाव ठीक करो। उसे सुधारो। यह कैसे ठीक हो ? मेरे समक्ष यह ही बड़ी समस्या है यही प्रश्न उत्पन्न हो रहा है।

बुधजन कहते हैं कि हे प्रभु ! मेरी विनती सुन लीजिये और मुझे शिवपुर की, मोक्ष की डगर, गैल रास्ता बताइये।



अहिंसक जैविक कृषि क्यों

भारत कृषि प्रधान देश है क्योंकि भारत की जीवन प्रणाली कृषि के माध्यम से ही स्थिर होती है। भारतीय आर्थिक समृद्धि की रीढ़ कृषि है। जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने षट्कर्मों का उपदेश देते हुये कृषि को जीवन पद्धति का प्रमुख साधन बताया तथा षट् आवश्यक अर्थ पुरुषार्थ की धुरी बताते हुये कृषि को महत्वपूर्ण पुरुषार्थ माना है। जैन पुराणों एवं वेदों में भी एक नारा प्रसिद्ध रूप से उपलब्ध होता है ऋषि बनो या कृषि करो गृहस्थ जीवन में उत्तम आजीविका का साधन कृषि माना गया है एवं सेवा या नौकरी को अधम आजीविका का साधन माना है।

वर्तमान में कृषि की स्थिति दयनीय होती चली जा रही है क्योंकि कृषि का अहिंसक रूप कम मिलता है क्योंकि खाद में यूरिया की प्रधानता, बीज में विदेशीकरण तथा कीटनाशक दवाईयों के भरपूर प्रयोग होने से कृषि उपजों में आरोग्य का संबंध टूट रहा है वर्तमान कृषि से उत्पन्न होने वाले पदार्थों से कई प्रकार की बीमारियों के पैदा होने की संभावना प्रबल रूप से सामने आ रही है वैज्ञानिक अनुसंधानों के परिणाम भी यह बताते हैं कि रासायनिक खादों के माध्यम से उत्पन्न, खाद्य पदार्थ ऑक्सीडेंट अथवा पोषक तत्व की मात्रा में अधिकतर कमी आ रही है जिससे उत्पादन की मात्रा तो बढ़ रही है परन्तु उनकी गुणवत्ता में विचित्र रूप से परिवर्तन हो रहा है।

जैविक खेती करने से सूक्ष्म जीव और बैक्टीरिया मिट्टी में पुनः स्थापित होते हैं तथा जड़ों के माध्यम से पोषक तत्वों का अवशोषण बढ़ता है तथा खाद्यान्न में पोषण की मात्रा बढ़ने से खाद एवं स्वास्थ्य दोनों में सुधार होता है अतः वर्तमान में अहिंसक जैविक खेती करने की एक क्रांति लाना आवश्यक हो गया है जो हरित क्रांति और श्वेत क्रांति से आगे बढ़कर विश्व खाद्य समस्या के निदान में नया आयाम देगी और करुणा की भावना को साकार करेगी।

गुरुपूर्णिमा दिगम्बर जैन आमनाय के परिप्रेक्ष्य में

✽ ब्र. डॉ. सविता जैन, रतलाम ✽

भारतीय संस्कृति ऋषियों मुनियों की संस्कृति हैं। भारतीय सभ्यता को संतों ने (गुरुओं ने) अपने ज्ञान चारित्र्य व तपोबल से समृद्ध बनाया है। विश्व की प्रत्येक संस्कृति और धर्म ने गुरु को सर्वोपरि स्थान दिया है।

दिगम्बर जैन आमनाय में वर्तमान हुण्डावसर्पिणी काल की चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर आदि ब्रह्मा भगवान आदिनाथ ही प्रथम गुरु माने जाते हैं। भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) ने गृहस्थ अवस्था में असि, मसि, कृषि, शिल्प, शास्त्र आदि 72 कलायें मानव समाज को सिखाई। अंक व शब्द ज्ञान के भी आप प्रणेता रहे हैं। चूंकि वर्तमान में अंतिम तीर्थंकर भगवान वर्धमान (महावीर) का शासन काल चल रहा है अतएव भगवान महावीर के समय से गुरु पूर्णिमा को उल्लेखित करते हैं। वैशाख कृष्ण दशमी को भगवान महावीर को केवलज्ञान हो गया किन्तु केवलज्ञान के पश्चात 65 दिन तक भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरी। समस्त श्रोता चिन्तित हो गये वे सब प्रतीक्षारत थे कि भगवान के मुखारविंद से कब धर्मोपदेश सुनें? सौधर्म इन्द्र भवितव्यता को जानकर विद्याविशारद इन्द्रभूति, वायुभूति एवं अग्निभूति गौतम गौत्री नामक ब्राह्मणों के आश्रम में बटुक का वेश धारणकर पहुंचता है। वे तीनों ब्राह्मण विद्वान् थे ज्ञानी थे किन्तु सम्यकज्ञान नहीं था मिथ्याभिमान था। वहां पहुंच कर बटुक वेशी इन्द्र ने उनसे कहा कि मेरी कुछ जिज्ञासा है। मेरे गुरु का मौन है कृपया आप मेरी जिज्ञासा का समाधान करें। बटुक वेशी इन्द्र ने पुछा -

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपद सहितं जीव षट्काय लेश्याः ।

पंचान्ये चास्तिकाया व्रत समिति गति ज्ञान चारित्र भेदाः ॥

इत्येतन्मोक्ष मूलं त्रिभुवन महितैः प्रोक्त मर्हदभिरीशैः ।

प्रत्येति श्रद्धधाति स्पृशति च मतिमान यः स वै शुद्ध दृष्टिः ॥

जैसे ही ये बात सुनी तीनों भाई हतप्रभ रह गये। सोचने लगे सब कुछ तो पढ़ा, किन्तु तीन काल छः द्रव्य आदि यह सब हमने नहीं पढ़ा है। तीनों भाई विद्वान् थे तीनों के 500-500 शिष्य थे, किन्तु सम्यकदर्शन के अभाव में अहम् था। जब उन्हें कोई उत्तर नहीं सुझा तो 500-500 शिष्यों के समक्ष लज्जित नहीं होना पड़े इस हेतु उन्होंने बटुक वेश धारी इन्द्र से कहा कि हम इसका उत्तर तुम्हें नहीं तुम्हारे गुरु के समझ ही देंगे और अभिमान वश कहा कि हमें अपने गुरु के पास ले चलो। वे तीनों गौतम गोत्री ब्राह्मण बटुक वेशधारी इन्द्र के साथ अपने-अपने 500-500 शिष्यों के साथ विपुलाचल पर्वत की ओर भगवान के समवशरण

की ओर चल दिये। जैसे ही समवशरण में पहुंचे सर्वप्रथम मानस्तम्भ का दर्शन करते ही अनेक मान गलित हो गया। उसी समय वे भगवान के श्री चरणों में नतमस्तक हो जाते हैं। और उनके प्रकार पश्चाताप करते हैं कि हमने आज तक वास्तविक धर्म को नहीं पहचाना इत्यादि हम आपसे ही विवाद करने आ गये हमें क्षमा करें प्रभु इस तरह इन्द्रभूति गौतम अपने भाईयों एवं सभी शिष्यों सहित तत्क्षण ही जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं। उसी समय उन्हें मनः पर्ययज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह तिथि आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा थी। दीक्षा ग्रहण कर गौतम स्वामी भगवान महावीर के प्रमुख प्रथम गणधर बने थे। वे वास्तविक गुरु हैं। तब से लेकर आज तक इस तिथि को गुरु पूर्णिमा मनाई जाती है।

गुरु पूर्णिमा एक ऐसा पर्व जिसमें अपने जीवन के मार्गदर्शक सभी निर्देशक को स्मरण किया जाता है अर्थात् गुरु-

गुरु शब्द का संधि विच्छेद जाये तो ग+उ+र+उ

(ग) का तात्पर्य गंभीर, (उ) का तात्पर्य उदार, (र) का तात्पर्य रहस्य (उ) का तात्पर्य उद्घाटन लिया जाये तो गुरु एक ऐसा व्यक्तित्व है जो गंभीर हो, उदार हो, रहस्य को उद्घाटन करने वाला हो। कहा गया है-

गुरु शब्द स्त्वन्ध कारस्य रू शब्दस्य तन्निवर्तकः

अंधकार विनाशित्वाद, गुरु इत्याभिधीयते।

(गु) अर्थात् अंधकार (रू) अर्थात् निवारण करने वाले। जो अज्ञान रूपी अंधकार निवारण करने वाले हैं वही सच्चे गुरु हैं।

क्षत्रचूडामणि ग्रंथ में आचार्य वादीमसिंह जी सूरी की परिभाषा दी है-

रत्नत्रय विशुद्धसन पार्श्व स्नेही परार्थकृत।

परिपालित धर्मोहित भवानोस्तरको गुरु ॥

अर्थात्- गुरु रत्नत्रय से विशुद्ध होते हुये भी भव्य जीवों पर स्नेह रखने वाले होते हैं, अहिंसा धर्म का पालन करने वाले गुरु ही भव सिन्धु में डूबते हुये भव्यजनों के तरण तारण हैं।

शास्त्र स्वाध्याय के प्रारंभ में मंगलाचरण में भी कहा गया है-

अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जन शलाकाया।

चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

अर्थात्- अज्ञान रूपी तिमिर से जो अंध हो गये हैं ऐसे चक्षुओं को ज्ञानाञ्जन की शलाका से उन्मीलित (खोलने) कर देने वाले गुरु नमस्कार के योग्य हैं।

जिस प्रकार कोई रोगी व्यक्ति अपनी चिकित्सा करवाने के लिये योग्य कुशल वैद्य अथवा चिकित्सक के पास जाता है और वह वैद्य अथवा चिकित्सक उसका परीक्षण कर

औषधि के माध्यम से उसे रोगमुक्त करता है उसी प्रकार गुरु हमारी आत्मा में जो विषय विकारों के रोग है उन्हें अपने ज्ञान तथा सदुपदेश रूपी औषधि के द्वारा नष्ट करते हैं। गुरु ही हमें समीचीन ज्ञान देकर हमें शिक्षित करते हैं। हमें सही अर्थों में जीना सिखाते हैं। अंग्रेजी लेखक रूकिणी ने कहा है कि-

The teachers is like the candle which lights other in consuming it Self.

अर्थात् शिक्षक मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाश देता है।

बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि- जिस के जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरू नहीं। यह एक दम सटीक है क्योंकि गुरु ही मानव समाज के नैतिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

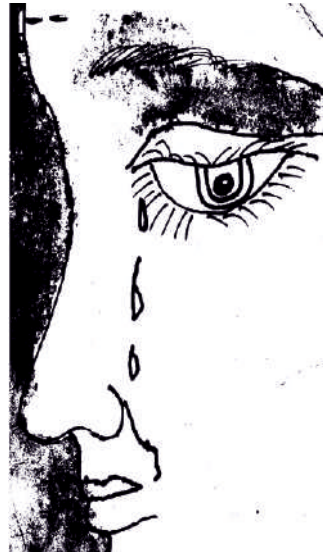
अन्ततः भगवान महावीर की देशना के संवाहक गुरु गौतम गणधर को स्मरण करते हुये उनके अनंत उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये, वर्तमान में गुरु परम्परा का निर्वहन करने वाले सभी गुरुओं के चरणों में नमन करते हुये हमें गुरु पूर्णिमा के आध्यात्मिक महत्व को स्मरण करना चाहिये। पुनः आप सभी को गुरु पूर्णिमा की बहुत बहुत बधाई।

कविता

दिल के फफोले

दिल के फफोले फूट गये, वह निकले नैना द्वाये
कैसा गुबार भरा था दिल में, जो बन निकले आसूँ सारे
चाहत क्या हैं राहत क्या है, जीवन की परवाह भी क्या है
आसूँ की शकलों में कैसी, सोचो तुम भी राहें क्या है
मुश्किल में मत नीर बहाना, खुशियों में तुम भूल न जाना
याद रहे तुमको चेतन, अपना शाश्वत शान्ति निकेतन
साहस में समता में तेरी, छुपी हुई है शान्ति अँनूठी
विषयों की है दुनियाँ झूठी, भोग विषय में रोना पड़ता
तेरे अन्दर सब सुख रहता, भोग वासना छोड़ दे बंदे
मत कर तू रोने के धंधे, आस लगा ले श्वास बढ़ा ले
फिर भी मौत न मानेगी, इक दिन सामने आयेगी

संस्कार फीचर्स



क्या है वीरशासन जयंती

* सुषमा जैन, भिलाई *

भारत में अनादि काल से पर्वों को मनाने की परम्परा रही है। वीरशासन जयन्ती एवं गुरु पूर्णिमा दोनों ही नैमित्तिक धार्मिक पर्व हम बड़े ही उत्साह एवं प्रभावना पूर्वक आयोजित करते हैं। इस दिन भगवान महावीर की जगत कल्याणी दिव्य ध्वनि खिरी थी। अंतिम तीर्थेश भगवान महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनके ज्ञान के आलोक से संसार आलोकित था। मंद मंद पवन बह रही थी। सौधर्म इन्द्र और देव केवलज्ञान कल्याणक की पूजा करके आनंदित थे। सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने विशाल सभा मण्डल समवशरण की रचना की, जिस सभा में बैठकर तीर्थकर भगवन्त प्राणी मात्र के कल्याण का उपदेश देते हैं वह सभा मण्डप समवशरण कहलाता है वहाँ पहुँचते ही प्राणी सब कुछ भूलकर धर्ममय वातावरण में निराकुल हो जाता है। श्री मण्डल भूमि में स्फटिक की सोलह दीवारों से विभाजित बारह कोठे होते हैं, जिनमें बारह सभायें होती हैं। तीर्थकर भगवान की बायीं ओर से क्रमशः 1. गणधर एवं समस्त मुनिराज 2. कल्पवासी देवियाँ 3. आर्यिकायें एवं श्राविकायें 4. ज्योतिषी देवियाँ 5. व्यंतर देवियाँ 6. भवनवासी देवियाँ 7. भवनवासी देव 8. व्यंतर देव 9. ज्योतिषी देव 10. कल्पवासी देव 11. चक्रवर्ती एवं मनुष्य 12. पशु पक्षी बैठते हैं। इसके मध्य में गंध कुटी में स्वर्ण सिंहासन पर स्वर्ण कमल पर आकाश में तीर्थकर भगवान विराजते हैं।

अंतिम तीर्थेश महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति वैशाख शुक्ला दशमी के दिन हो चुकी थी। आषाढ़ मास व्यतीत होने को था पर अभी तक महावीर की दिव्य ध्वनि आरंभ नहीं हुई थी। राजगृह के निकट विपुलाचल पर्वत पर समवशरण में यथास्थान सभी विराजमान थे। पैंसठ दिन व्यतीत हो चुके थे। दिव्य ध्वनि नहीं खिरी थी। सौधर्म इन्द्र ने अवधि ज्ञान से ज्ञात किया कि जब तक यथार्थ ज्ञानी गणधर उपस्थित नहीं हैं, तब तक तीर्थकर की वाणी नहीं खिरेगी। तीर्थकर की ज्ञान साधना गणधर के माध्यम से ही अभिव्यक्ति को प्राप्त होगी। सौधर्म इन्द्र बटुक का रूप धारण कर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ मगध में सोहिल नामक ब्राह्मण विद्वान ने मध्यमापावा में एक विराट यज्ञ का आयोजन किया था। इस यज्ञ का नेतृत्व मगध के प्रसिद्ध विद्वान इन्द्रभूति गौतम कर रहे थे। इस अनुष्ठान में सहस्रों विद्वानों के साथ अग्निभूति वायुभूति आदि ग्यारह महापण्डित उपस्थित थे। इन्द्रभूति गौतम का व्यक्तित्व विराट एवं प्रभावशाली था। पाँच सौ छात्र उनके पास अध्ययन करते थे। सौधर्म इन्द्र बटुक का रूप बनाये हुये इन्द्रभूति गौतम के पास जाकर बोले आप दर्शन, न्याय, तर्क, ज्योतिष और आयुर्वेद के मर्मज्ञ विद्वान हैं। मुझे एक गाथा का अर्थ समझ में नहीं आ रहा। उसका अर्थ ज्ञात करने की जिज्ञासा है और अत्यंत विनम्रता से कहा-

पंचेव अत्थिकाया छज्जीव-णिकया महव्वया पंच।

अट्टयपवयण-मादा सहेउओ बंध-मोक्खो य॥

इन्द्रभूति गौतम समझ नहीं पा रहे थे कि पंचास्तिकाय क्या है, छः जीवनिकाय कौन से हैं आठ प्रवचन मात्रिकायें क्या हैं। उन्हें जीव के अस्तित्व के सम्बंध में स्वयं शंका थी वे बटुक रूप धारी इन्द्र से बोले तुमने ये गाथा किससे सीखी? इन्द्र बोले मैंने यह गाथा अपने गुरु तीर्थंकर महावीर से सीखी पर वे कई दिनों से मौन हैं अतः इसका अर्थ मैं उनसे नहीं जान पाया। तब इन्द्रभूति ने कहा कि चलो तुम्हारे गुरु के समक्ष ही इस गाथा का अर्थ बताऊंगा। सौधर्म इन्द्र बहुत प्रसन्न हुये और विचारने लगे कि मेरा कार्य संपन्न हुआ।

मानस्तंभ को देखते ही इन्द्रभूति गौतम का मान दलित हो गया। सम्यक्त्व प्रगट हो गया उन्होंने अनेक प्रकार से स्तुति करते हुये भगवान महावीर के चरणों में नमस्कार किया। अपने पांचसौ शिष्यों के साथ भगवान के पादमूल में जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली। अन्तरमुहूर्त में ही रिद्धियाँ प्राप्त कर मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय इन चारों ज्ञान के गणधर गुरु मिले, यह दिन गुरुपूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अगले दिन श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के दिन ब्रह्म मूहूर्त में भगवान महावीर की दिव्यध्वनि खिरी। और धर्मतीर्थ का प्रारंभ श्रावण-कृष्ण-प्रतिपदा को हुआ। तभी से यह दिन वीरशासन जयंती के रूप में मनाया जाता है।

इन्द्रभूति गौतम अपने पाँचसौ शिष्यों के साथ दीक्षा लेकर भगवान महावीर के प्रधान गणधर पद पर विराजे। महावीर भगवान के समवशरण में ग्यारह गणधर थे। अग्निभूति और वायुभूति ने भी अपने-अपने पाँच सौ पाँच सौ शिष्यों के साथ समवशरण में दीक्षा ली और तीसरे गणधर अग्निभूति व चौथे गणधर वायुभूति हुये। शुचिदत्त ने दिगम्बर दीक्षा लेकर भगवान महावीर के चतुर्थ गणधर का पद प्राप्त किया। सुधर्मास्वामी ने समवशरण में दीक्षा ग्रहण करी गणधरों में पाँचवें गणधर बने, सुधर्मा स्वामी ने बहुत वर्षों तक श्रमण संघ का संचालन किया। मण्डिक सांख्य-दर्शन के समर्थक थे, वे दीक्षा लेकर छठवें गणधर हुये। मौर्य पुत्र ने समवशरण में यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर जैनेश्वरी दीक्षा धारण करी, वे सातवें गणधर हुये, अकम्पिक ने भी जैनेश्वरी दीक्षा लेकर, आठवें गणधर पद को सुशोभित किया। अचल आत्मकल्याण की भावना से महावीर के पादमूल में दीक्षा ग्रहण कर समवशरण में नवमं गणधर हुये। मेदार्य भगवान महावीर के चरण सान्निध्य में दिगम्बरी दीक्षा लेकर दसवें गणधर हुये। राजगृहि निवासी प्रभास ने महावीर के दर्शन से ही आत्मकल्याण के विचार से दिगम्बरी दीक्षा धारण करी और वे भगवान के ग्यारहवें गणधर पद पर आसीन हुये।

इस प्रकार विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर के समवशरण में इन्द्रों द्वारा पूजनीय ग्यारह गणधर और इनके साथ तीन सौ ग्यारह अंग चौदह पूर्वों के धारक थे, नौ हजार नौ सौ यथार्थ संयम को धारण करने वाले शिक्षक थे, एक हजार तीन सौ अवधि ज्ञानी थे, सात सौ केवलज्ञानी परमेष्ठी थे, नौसौ विक्रिया रिद्धि के धारक थे, पांच सौ पूजनीय मनः पर्यय ज्ञानी थे और चारसौ

अनुत्तरवादी थे इस प्रकार सब मुनिराजों की संख्या चौदह हजार थी। गणिनी आर्यिका चन्दना को लेकर छत्तीस हजार आर्यिकार्यें एक लाख श्रावक तीन लाख श्राविकार्यें थी, असंख्यात देव-देवियाँ और संख्यात तिर्यच थे। तीर्थंकर महावीर ने समवशरण में सिंहासन के मध्य में स्थित हो अर्धमागधी भाषा में छः द्रव्य सात तत्त्व संसार और मोक्ष के कारण और उनके फल का प्रमाण नय निक्षेप आदि उपायों के द्वारा विस्तार से निरूपण किया।

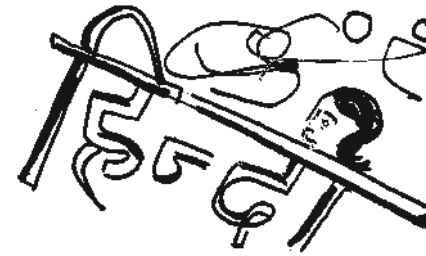
वर्तमान समय में वीरशासन जयंति और गुरु पूर्णिमा मनाना तभी सार्थक होगा जब हम लौकिक शिक्षा के साथ अपने आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त करने के लिये एक अपना गुरु बनायें। वन्दन पूजन वैयावृत्ति तो हम सभी निर्ग्रन्थ मुनिराजों की करें, लेकिन अपनी प्रगति के लिये किसी एक को अपना गुरु बनायें जिनसे हम सदैव मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। भगवान महावीर के बताये पथ पर चलकर परमात्म पद करने का सम्यक् पुरुषार्थ कर पायें।

संदर्भ सूची- 1. उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र कृत-संपादक एवं अनुवादक डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली

2. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा (खण्ड 1) लेखक (स्व. डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य)

कविता

हिन्दी भाग्य विधाता



हम सबकी भाषा,
प्यारी भाषा,
माँ की भाषा
स्वाभिमान की सहपरिभाषा,
हिन्दी भाषा
गंगा में है जब तक पानी
तब तक गूँजे हिन्दी वाणी

हिन्दी है जन जन कल्याणी
सरल सुबोध भाषा वरदानी
सरस्वती का प्रसाद है
ज्ञान वृद्धि अरू सुखद स्वाद है
अंग्रेजी है चिन्ह गुलामी
इसको अपनाना है खामी
विद्या विनय विवेक है हिन्दी
भारत का की अनुपम बिन्दी
हिन्दुस्तानी हिन्द है प्यारा
हिन्दी का है जलवा न्यारा
आओ हम हिन्दी अपनपायें
भारत का हम मान बढ़ाये
हिन्दी देवी हिन्दी माता
हिन्दी भारत भाग्य विधाता



अयम स्वास्थ्य योग

प्राणायाम से आरोग्य

कपाल भाति: तीव्र गति से धोकनी के समान श्वास लेवे व छोड़े इसमें भी धीमी गति से तेजगति की ओर जायें। क्रिया की समाप्ति पर अपना ध्यान दोनों भोहों के मध्य जहाँ टीका लगाते हैं, उसके पीछे लगायें।

लाभ: इस अभ्यास से आध्यात्मिक चेतना बढ़ती है मन अन्तः करण में स्थापित होता है। इसके अभ्यास से आज्ञा चक्र शक्तिशाली होता है।

शीतली प्राणायाम: जीभ को गोल नाली के समान बनाकर उसके माध्यम से श्वास को अन्दर खींचें। श्वास को अपनी क्षमतानुसार रोककर रखें। जब श्वास नहीं रूकने पाये तब गर्दन सीधी रखते हुये दोनों स्वरो से धीरे-धीरे श्वास को खाली करें। अंत में मूलबंध ढीला छोड़ें।

लाभ: इसके अभ्यास से शरीर अनावश्यक ऊष्मा से मुक्त होता है।

सीत्कारी प्राणायाम: जीभ को तालू से लगा दें। दांतों की पंक्ति को आपस मिला लें। सी-सी की ध्वनि के साथ श्वास भरें, गर्दन झुका लें व मूलबंध लगाकर श्वास रोकें। श्वास नहीं रूकने पर गर्दन सीधी करते हुये श्वास खाली करें अन्त में मूलबंध छोड़ें।

लाभ: इसके अभ्यास से शरीर अनावश्यक ऊष्मा से मुक्त होता है।

प्लाविनी प्राणायाम: पेट को गुब्बारे की तरह फुलाकर श्वास भर लें। जालंधर बंध (ठोड़ी को सीने से लगाकर बन्द करना) एवं मूलबंध लगाकर यथा शक्ति रोकें। क्षमता चुकने पर धीरे से सिर सीधा करते हुये बिना मूलबंध छोड़े श्वास धीरे-धीरे छोड़ें (कभी भी वेग से नहीं) अंत में मूलबंध शिथिल करें। रेचन करते हुये पेट को अंदर दबाते हुये उड्डियान की स्थिति तक जायें।

लाभ: पाचन तंत्र की मुख्यता बड़ी आंत व मलद्वार की क्रिया शीलता बढ़ाती है।

समयसार में प्रतिपादित व्यवहार नय की प्रयोजनीयता

✽ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✽

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने समयसार ग्रंथ की प्रस्तावना या पीठिका में व्यवहार नय की प्रयोजनीयता सिद्ध करने के लिये दो गाथाओं को लिपिबद्ध किया है उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि जिस प्रकार कोई ब्राह्मण आदि विशिष्ट पुरुष म्लेच्छ आदि को समझाने के लिये म्लेच्छ भाषा का प्रयोग करता है अन्यतः काल में नहीं उसी प्रकार ज्ञानी पुरुष अज्ञानी असंयमी पुरुषों को प्रतिबोध देने के समय में ही व्यवहार का आश्रय लेता है अन्य समय में नहीं।

ववहारोऽभूदत्थो भूदत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।

भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मदिट्ठि हवदि जीवो ॥३॥

आचार्य जयसेन जी एवं अमृतचंद सूरि ने एक दृष्टांत के माध्यम से अपनी बात समान रूप से दोनों आचार्यों ने कही है -

जैसे कोई ग्रामीण पुरुष तो कीचड़ सहित तालाब आदि का जल पी लेता है। किन्तु नागरिक विवेकी पुरुष तो उसमें कतकफल-निर्मली डालकर उसे निर्मल बनाकर पीता है उसी प्रकार स्वसंवेदन ज्ञान रूप भेद भावना से रहित जो मनुष्य है वह तो मिथ्यात्व और रागादि रूप विभाव परिणाम सहित ही आत्मा का अनुभव करता है किन्तु जो सम्यग्दृष्टि (संयत) मनुष्य होता है वह तो अभेद रत्नत्रय लक्षण निर्विकल्प समाधि के बल से क्षपक स्थानीय निश्चय नय का आश्रय लेकर शुद्ध आत्मा का अनुभव करता है।

आचार्य जयसेन जी ने उक्त गाथा की टीका में नय चतुष्टय पर प्रकाश डाला है व्यवहार नय को भूतार्थ और अभूतार्थ के भेद से दो प्रकार का व्यवहार नय स्वीकार किया है तथा शुद्ध निश्चय नय और अशुद्ध निश्चयनय से दो भेद निश्चय नय के मान्य किये हैं इस तरह से नय चतुष्टय का विशेष उल्लेख आचार्य जयसेन जी ने किया है।

व्यवहार नय किस काल में प्रयोजनवान है

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहा है जो शुद्ध नय तक पहुँचकर श्रद्धावान पूर्ण ज्ञान और चारित्रवान हो गये हैं उन्हें शुद्ध का उपदेश करने वाला शुद्ध नय जानने योग्य है किन्तु जो जीव दर्शन और चारित्र की पूर्ण अवस्था को प्राप्त नहीं हुये हैं साधक अवस्था में ही स्थित हैं वे व्यवहार नय द्वारा उपदेश करने के योग्य हैं।

सुद्धो शुद्धा देसो णायव्वो परम भावदरिसीहिं।

ववहार देसिदा पुण जे दु अपर में ट्ठिदा भावे ॥२॥

आचार्य अमृतचन्द्र और जयसेन जी ने समान दृष्टांत देते हुये कहा है सोलहवानी स्वर्ण के समान अभेद रत्नत्रय स्वरूप समाधि काल प्रयोजनवान होता है किन्तु पन्द्रह चौदह आदि वानी के समान स्वर्ण लाभ भी प्रयोजनवान होता है। संयत मनुष्य जब अभेदात्मक परम समाधि में

तल्लीन होकर रहता है उस समय वह शुद्ध निश्चय का आश्रय करने वाला है किन्तु उससे नीची अवस्था में क्या संयत, क्या संयता संयत और क्या असंयत सम्यग्दृष्टि ये सभी व्यवहार नय में प्रवृत्त रहते हैं उसके बिना उसका निर्वाह नहीं हो सकता एवं क्षयोपशम ज्ञान का धारी संयमी मनुष्य भी जब तक समाधि में स्थिर है तब तक वह शुद्धोपयोगी है किन्तु इतर काल में वह शुभोपयोगी होता है पर संयता संयत और सम्यग्दृष्टि तो शुभोपयोगी ही होते हैं क्योंकि उनकी शुद्धोपयोग तक पहुँच भी नहीं है।

व्यवहार नय की प्रयोजनीयता सिद्ध करने के लिये आचार्य अमृतचन्द्र देव ने एक गाथा अपनी टीका में विशेष तौर पर उद्धृत की है-

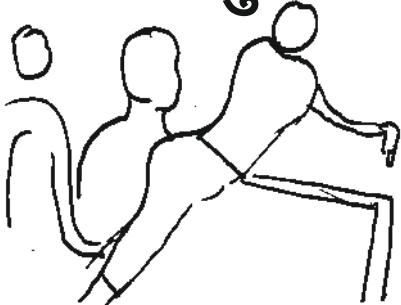
जड़ जिणमयं पवज्जह ता मा व्यवहार णिच्छए मुथह।

एकेण विणा छिज्जह तित्थं अण्णेण उण तच्चं॥

हे भव्य जीवो यदि तुम जिनमत का प्रवर्तन करना चाहते हो तो व्यवहार और निश्चय दोनों नयों को मत छोड़ो क्योंकि व्यवहार नय के बिना तीर्थ व्यवहार धर्म का नाश हो जायेगा तथा निश्चय के बिना वस्तु तत्त्व का नाश हो जायेगा अतः जब तक साक्षात् शुद्धात्मा की प्राप्ति न हो जाये तब तक व्यवहार नय प्रयोजनवान है इस तरह से आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में व्यवहार नय प्रयोजनवान सिद्ध होता है स्याद्वाद के आधार पर दोनों नय के विषयभेद में आया विरोध नष्ट होता है।

कविता

खुशी का एक रास्ता



जब समागम होता है संतो का
चरण पड़ते हैं चौके में
खुशी हो जाती है पड़गाहन में
पर अचानक क्यों ऐसा होता है
मुनि श्री लौट जाते हैं
लौट करके वे फिर नहीं आते हैं

उनके लौटन के बाद
यह पता लग जाता है
कि खुशी और गम
दोनों का दौर चलता है
कभी खुशी मिलती है
तो कभी मिलते हैं गम
पर खुशी गम में बदल जाती है
गम खुशी में नहीं बदल पाते हैं
क्योंकि खुशियां मंहगी होती हैं
गम होते हैं सस्ते
खुशी का रास्ता एक होता है।
गम के होते हैं हजार रास्ते

चलो देखें यात्रा

महिमावान तीर्थ कनकगिरि

क्षेत्र का महत्त्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या -03 (24 चरण प्रत्येक नसियायें)

क्षेत्र पर पहाड़ - है, 350 सीढ़ियाँ हैं वाहन ऊपर तक जा सकते हैं

ऐतिहासिकता- कनकगिरि या कनकाद्रि के नाम से जाना जाता है। आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी की तपोभूमि एवं समाधि क्षेत्र, कर्नाटक, केरल एवं तमिलनाडु राज्यों की सीमा पर स्थित मलेयूर गांव में स्थित है। भगवान महावीर का विहार यहाँ हुआ था। कर्नाटक राज्य के मैसूर नगर से 50 किमी. की दूरी पर स्थित मनोरंग शिलाखण्डों का पर्वत सूर्यपुर के महान तपोनिधि सुप्रतिष्ठ महामुनि ने घोर तप साधना के फलस्वरूप केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया। अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी से संबंध शिलालेख एवं गुफायें यहाँ उपलब्ध है। श्री अनंतबल मुनि का यह केवलज्ञान स्थल है। यह ज्ञानचंद मुनि की मोक्ष स्थली है। जैन मुनि तपस्वियों के साधकों की संल्लेखना विधिपूर्वक समाधि के बारे में 27 से भी अधिक शिलालेख है। चौबीस तीर्थकरो के चरण स्थापित, टोके भी निर्मित हैं।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- श्रवणबेलगोला वाया मैसूर - 140, चन्द्रनागिरि वेनाडू (केरल) केलसूरा, ऊंटी - 138 आचार्य वीरसेन स्वामी- धवला के अमूल्य ग्रंथों के रचयिता की तपोभूमि - श्री दिगम्बर जैन मठ भी है। प्राचीन तीर्थक्षेत्र है, अनेक जैनाचार्यों की समाधि स्थली है।

निकटतम प्रमुख नगर- मैसूर शहर - 58 किमी, मैसूर - ऊंटी के मध्य नजनगूड शहर 25 किमी, हवे - 4 किमी, मंगूर - 50 किमी, उम्मतूर - 35 किमी, कुदेरू - 2 किमी, तगडूर - 20 किमी, एचिगनहल्ली - 35 किमी, बेंगलोर - 200 किमी।

प्रबंध व्यवस्था-

संस्था- श्री दिगम्बर जैन मठ, कनकगिरि

अध्यक्ष- स्वस्ति श्री भट्टारक भुवनकीर्ति जी

मंत्री- श्री विनोद बाकलीवाल, मैसूर (9900420001)

प्रबंधक- श्री मेघराज (09449203201)

आवागमन के साधन- रेल्वे स्टेशन-कवलन्दे - 10 किमी, मैसूर - 52 किमी

बस स्टैंड- मलेयूर - 1 किमी

पहुँचने का मार्ग- नजनगूड (ऊंटी हाइवे) से 25 किमी.

सरलतम मार्ग- चामराजनगर 20 किमी

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास-कमरे (अटैच बाथरूम) - 20, यात्री निवास 18 कमरे अटैच

सुविधायें- हॉल - 3 (यात्री क्षमता - 100+500+50)

यात्री ठहराने की कुल क्षमता- 300, गेस्ट हाऊस - 13

भोजनशाला - नियमित

विद्यालय- स्कूल/कॉलेज/ आश्रम

औषधालय- है

शास्त्र- 100

पुस्तकालय- पुस्तकें 5000

टेलीफोन- 08226211786, 210786, 09449203201

नाम एवं पता- श्री कनकगिरि दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र, कनकगिरि ग्राम- पो. मलेयूर तह. एवं जि. चामराजनगर (कर्नाटक) 571128

परोपकार-मानवता का दूसरा नाम

✽ अरविन्द जैन, भोपाल ✽

परोपकार शब्द पर और उपकार शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है दूसरों पर किया जाने वाला उपकार। ऐसा उपकार जिसमें कोई अपना स्वार्थ न हो उसे परोपकार कहते हैं। परोपकार को सबसे बड़ा धर्म कहा गया है और करुणा, सेवा सब परोपकार के ही पर्यायवाची हैं। जब किसी व्यक्ति के अन्दर करुणा का भाव होता है तो वो परोपकारी भी होता है।

सबसे पहले हमें अपने माता-पिता के परोपकार के लिये हमेशा ऋणी होना चाहिये, इसके बाद गुरुओं का उपकार बहुत की महत्वपूर्ण है, उनके उपकार के कारण हम पढ़ लिख सके और इस योग्य बने। हम जो कुछ भी हैं और बने उसमें हम पर सबसे बड़ा उपकार भगवान के साथ पुस्तकों और गुरुओं का है।

किसी व्यक्ति की सेवा या उसे किसी भी प्रकार के मदद पहुंचाने की क्रिया को परोपकार कहते हैं। यह गर्मी के मौसम में राहगीरों को मुफ्त में ठंडा पानी पिलाना भी हो सकता है या किसी गरीब की बेटी के विवाह में अपना योगदान देना भी हो सकता है। कुछ मिला के हम यह कह सकते हैं कि किसी की मदद करना और उस मदद के एवज में किसी चीज की मांग न करने को परोपकार कहते हैं। दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जो दूसरों की मदद करते हैं और कहीं न कहीं भारत में ये बहुत ज्यादा है।

परोपकार एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ शायद ही कोई न जानता हो, यह एक ऐसी भावना है जिसका विकास बचपन से ही किया जाना चाहिये। हम सबने कभी न कभी किसी की मदद जरूर की होगी और उसके बाद हमें बड़ा की गर्व का अनुभव हुआ होगा, बस इसी को परोपकार कहते हैं। परोपकार के कई रूप हैं, चाहे यह आप किसी मनुष्य के लिये करें या किसी जीव के लिये।

आज-कल लोग अधिक व्यस्त रहने लगे हैं और उनके पास अपने लिये समय नहीं होता ऐसे में वे दूसरों की मदद कैसे कर पायेंगे। ऐसे में यह आवश्यक है की परोपकार को अपनी आदत बना लें इससे आप खुद तो लाभान्वित होंगे ही अपितु आप दूसरों को भी करेंगे। राह चलते किसी बुजुर्ग की मदद कर दें तो कभी किसी दिव्यांग को कंधा दें।

यकीन मानिये परोपकार करके अच्छा लगता है, जब इसके लिये अलग से समय निकालने की बात की जाये तो शायद यह कठिन लगे। आज कल के दौर में लोग दूसरों से सहायता लेने से अच्छा अपने फोन से ही सारा काम कर लेते हैं परन्तु उनका क्या जिनके पास या तो फोन नहीं है ओर है भी तो चलाना नहीं आता। इसीलिये परोपकारी बनें और सबकी यथा

संभव मदद अवश्य करें।

परोपकार की बातें हमारे धर्म ग्रंथों में भी लिखी हुई हैं और यही मानवता का असल अर्थ है। दुनिया में भगवान किसी को गरीब तो किसी को अमीर क्यों बनाते हैं? वो इसलिये जिसके पास धन है, वो निर्धन की मदद करें। और शायद इसी वजह से वे आपको धन देते भी हैं, ताकि आपकी परीक्षा ले सकें। जरूरी नहीं की यह केवल धन हों, कई बार आपके पास दूसरों की अपेक्षा अधिक बल होता है तो कभी अधिक बुद्धि। किसी भी प्रकार से दूसरों की मदद करने को परोपकार कहते हैं और यही असल मायनों में मानव जीवन का उद्देश्य होता है। हम सब इस धरती पर शायद एक दुसरे की मदद करने ही आये हैं।

कई बार हमारे सामने सड़क दुघटनायें हो जाती हैं और ऐसे में मानवता के नाते हमें उस व्यक्ति की सहायता करनी चाहिये। किसी भी व्यक्ति को सबकी निःस्वार्थ मदद करनी चाहिये और फल की चिंता न करते हुये अपना कर्म करते रहना चाहिये।

परोपकार से बढ़ के कुछ नहीं है और हमें दूसरों को भी प्रेरित करना चाहिये की वे बढ़-चढ़ कर दूसरों की मदद करें। आप चाहें तो अनाथ आश्रम जाकर वहां के बच्चों को शिक्षा दे सकते हैं या अपनी तनख्वाह का कुछ हिस्सा गरीबों में बांट सकते हैं। परोपकार अथाह होता है और इसका कोई अंत नहीं है इसलिये यह न सोचें की केवल पैसे से ही आप किसी की मदद कर सकते हैं। बच्चों में शुरु से यह आदत विकसित करनी चाहिये। बच्चों को विनम्र बनायें जिससे परोपकार की भावना स्वतः उनमें आये। एक विनम्र व्यक्ति अपने जीवन में बहुत आगे जाता है और मानवता को समाज में जीवित रखता है।

हमारी भारतीय संस्कृति इतनी धनी है की यहां बच्चे को परोपकार की बातें बचपन से ही सिखाई जाती हैं। अपितु यहाँ कई वंशों से चला आ रहा है, परोपकार की बातें हम अपने बुजुर्गों से सुनते आये हैं और नहीं इससे संबंधित कई कहानियां, हमारे पौराणिक पुस्तकों में भी लिखे हुये हैं। हम यह गर्व से कह सकते हैं कि यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है। हमारे शास्त्रों में परोपकार के महत्व को बड़ी अच्छी तरह दर्शाया गया है। हमें अपनी संस्कृति को भूलना नहीं चाहिये अर्थात् परोपकार को नहीं भूलना चाहिये।

आज कल के दौर में सब आगे बढ़ने की होड़ में इस कदर लगे हुये हैं की परोपकार जैसे सबसे पुण्य काम को भूलते चले जा रहे हैं। इंसान मशीनों के जैसे काम करने लगा है और परोपकार, करुणा, उपकार जैसे शब्दों को जैसे भूल सा गया है। चाहे हम कितना भी धन कमा लें परन्तु यदि हमारे अन्दर परोपकार की भावना नहीं तो सब व्यर्थ है। मनुष्य का इस जीवन में अपना कुछ भी नहीं, वह अपने साथ यदि कुछ लाता है तो वे उसके अच्छे कर्म ही होते हैं। पूजा पाठ इन सबसे बढ़कर यदि कुछ होता है तो वो है परोपकार की भावना और यह

कहना गलत नहीं होगा की यह सबसे बड़ा धर्म है।

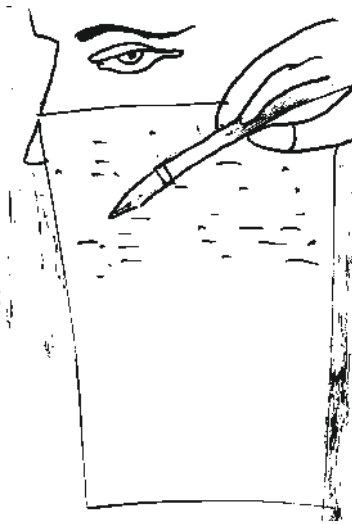
परोपकार के संबंध में हजारों हजार उदाहरण हैं जिनमें एक उदाहरण एक बार एक राजनेता अपने ऑफिस जा रहे थे उस दिन बहुत महत्वपूर्ण मीटिंग थी, रास्ते में एक व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त पड़ा था, उन्होंने देखा और तत्काल गाड़ी रोककर उस दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को स्वयं उठाकर गाड़ी में लिटाया और हॉस्पिटल ले गये उसके बाद वे खून से लथपथ अपने कार्यालय पहुंचे, उपस्थित लोग घबराये तब उन्होंने पूरी बात बताई। इस प्रकार परोपकार के लिये कोई भी पद या व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं होता। इसको कहते हैं मानवता। इस प्रकार हमें किसी की मदद करने में विलम्ब नहीं करना चाहिये। समय पर किया गया कार्य जिससे किसी का भला होता है विलम्ब नहीं करना चाहिये। एक चिकित्सक होने के नाते इस क्षेत्र में एक एक मिनट बहुत महत्वपूर्ण होता है। चिकित्सक होने के नाते हमेशा तैयार रहना पड़ता है। कोई भी मरीज जितने समय भी आये तत्काल उसकी मदद / इलाज करना चाहिये। पचास वर्ष के चिकित्सा काल में अनेकों बार सब काम छोड़कर चिकित्सा को प्राथमिकता दी चाहे दिन हो या रात। विगत तीस वर्षों से निःशुल्क चिकित्सा परामर्श और औषधि जितनी हो उपलब्धता के आधार पर देता हूँ।

कविता

लिखो-लिखो

✽ श्रीमती सुनीता कठरया, बीना ✽

लो ये कागज, ये कलम भी ले लो।
लो बात मन में है, होठों पर लाने की न हो यदि
मन ही मन में, उसे लेकर घुटते न रहो।
लो ये कागज, ये कलम भी ले लो।
बात होठों तक आ भी जाये पर...
सुनने वाला हो न कोई किसको सुनाऊँ
कौन सुनेगा ?
जो कहना है, उसे लेकर मन ही मन में घुटते न रहो
अपनी बात, अपने से अपने को ही सुना डालो
और फिर भी बात न बने तो कागज कलम उठाकर
अपने भावों को अभिव्यक्त करो
लो ये कागज, ये कलम भी ले लो।



युवा पीढ़ी उगता सूरज देखना भूल गयी

✽ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ ✽

पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से युवा पीढ़ी प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से विमुख हो रही है। आधुनिक संचार क्रांति एवं सोशल मीडिया के निरंतर बढ़ते प्रभाव से जितने लाभ हैं, उनसे ज्यादा नुकसान युवा पीढ़ी को हो रहा है। युवा वर्ग अनेक विकृतियों से घिर गया है। समय का प्रभाव कहे या पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कहे आज के युवा वर्ग की जीवन शैली ही पूरी तरह से बदल गयी है। युवाओं की सोच एवं जीवन शैली में परिवर्तन होना गंभीर एवं विचारणीय प्रश्न है। सहशिक्षा, प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, क्लब संस्कृति, विवाह पूर्व फिल्मांकन, हनीमून यात्रा, शराब, स्मैक, हुक्का आदि से नशा करने की अनेक गंदी आदतें युवाओं में बढ़ती जा रही हैं। आज हम युवाओं की एक और गलत आदत प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व नहीं जागने का उल्लेख कर रहे हैं। मेरे सहयोगी समाज सेवी अभिन्न मित्र अजय जैन वरया ललितपुर ने ज्वलंत समस्या पर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। आपका कहना है आज के अधिकतर युवक उगते हुये सूरज को देख ही नहीं पाते, उन्हें नहीं पता कि सूरज कब उगता है और कैसा दिखता है उगते सूरज को देखने से कुछ मिनट संपर्क में रहने से क्या-क्या लाभ होते हैं। वह इन सबसे अनभिज्ञ है। क्योंकि वर्तमान परिवेश के अधिकांश युवा वर्ग सुबह 9.00 से 11.00 बजे तक बिस्तर पर ही रहता है। यह हाल किसी एक परिवार का नहीं है। ऐसे भारत में अधिकतर परिवार देखने को मिल जायेंगे। आज जहां मोबाईल कई लोगों के लिये वरदान साबित हुआ है वहीं अधिकांश युवाओं के लिये अभिशाप बन रहा है। भारतीय संस्कृति में आयुर्वेद का उल्लेख है आयुर्वेद के दिशा निर्देश अनुसार रात्रि 10.00 बजे तक सोने का समय होता है इसके विपरीत युवा वर्ग रात्रि 10.00 बजे से मोबाईल चलाना प्रारंभ करता है और 12.00 बजे से 1.00 बजे तक मोबाईल में ही उलझा रहता है। जिसके परिणाम स्वरूप में देर सुबह तक अपनी नींद पूरी करने के लिये मजबूर हो जाता है। बच्चों की इस जीवन शैली से माता-पिता तनाव में रहते हैं, वही बच्चे के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। आज के अधिकतर बच्चों, किशोरों एवं युवकों को चश्मा लगा रहे हैं। क्योंकि उनकी आंखों की रोशनी कम हो रही है। बच्चों में देर रात तक जागने के कारण चिड़चिड़ापन भी हो रहा है। साथ ही जैसे युवा अवस्था में बच्चों को माँ-बाप का सहारा बनना चाहिये। अपना भविष्य बनाने की सोचना चाहिये। लेकिन कुछ उल्टा ही हो रहा है। आज बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों को भविष्य को लेकर चिंतित नजर आ रहे हैं। साथ ही बच्चे भी तनावग्रस्त हो रहे हैं। अपनी ऊर्जा का

सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं। माता-पिता और परिवार जन चाहते हैं युवा वर्ग सही समय पर सोना और सही समय पर उठना प्रारंभ कर दें और सूर्य की प्रथम किरण का आनंद ले। वर्तमान में बढ़ रहे प्रदूषण की वजह से युवाओं के शरीर की चमड़ी कठोर नजर आती है उसमें भी सुधार आयेगा। और शरीर में खून का संचार ठीक रहेगा। अगर आप ज्यादा देर तक सोते हैं तो दिल की सेहत पर बोझ पड़ने लगता है। वर्ष 2013 में अमेरिकन जर्नल ऑफ कार्डियोलॉजी की एक रिपोर्ट के अनुसार लंबे समय तक सोने से लेफ्ट वेंट्रिकुलर का वजन बढ़ सकता है। जिससे हार्ट अटैक की आशंका बढ़ने लगती है। न्यूरोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन में पाया गया है कि कम नींद की वजह से कार्डियोवैस्कुलर रोगों का खतरा 18% बढ़ जाता है। जबकि देर तक सोने की वजह से स्ट्रोक का जोखिम 40% रहता है। स्मरणीय है कि अच्छे स्वास्थ्य के लिये पर्याप्त नींद जरूरी है। भरपूर नींद लेने से आपको दिन के कामों को करने के लिये ऊर्जा मिलती है। रोजाना 8 से 9 घंटों की नींद लेते हैं तो डायबिटीज और हाई ब्लड प्रेशर जैसी समस्याओं से भी आपका बचाव होता है। इसका यह बिल्कुल भी मतलब नहीं कि घंटों सोते रहे। क्योंकि यह आदत आपको बीमार बना सकती है। ज्यादा देर तक सोना व सुबह के समय देर तक सोने से आपको कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में अधिक सोना डिप्रेशन, हृदय संबंधी रोग, थायरॉइड और कुछ विशेष प्रकार की बीमारियों का संकेत भी हो सकता है। इसलिये इस स्थिति को ठीक से समझना जरूरी है लंबे समय तक सोना आपके मूड को भी प्रभावित कर सकता है। इसलिये इस स्थिति को ठीक से समझना जरूरी है लंबे समय तक सोना आपके मूड को भी प्रभावित कर सकता है इससे आपको अवसाद भी हो सकता है। नींद मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर को प्रभावित करती है। लंबी नींद से शारीरिक गतिविधि कम हो जाती है। जबकि न्यूरोट्रांसमीटर के स्तर को बढ़ाने के लिये अधिक शारीरिक गतिविधि महत्वपूर्ण है। जो आप की मनोदशा को बेहतर बनाती है। वर्तमान में युवक-युवती उच्च शिक्षा हेतु बड़े नगरों में जाते हैं। बड़े नगरों में अपने मित्रों के संपर्क से मौज मस्ती करने बड़े-बड़े होटलों एवं क्लबों में जाने लगते हैं। माता-पिता समझते हैं उनकी संतान उच्च अध्ययन कर रही है, मगर ये अपने परिवार को धोखा देते हैं। पिछले दस वर्ष पुरानी घटना है हम सामाजिक बैठक में भाग लेने रेल से प्रातः 6 बजे हजरत निजामुद्दीन रेल स्टेशन उतरे। हम टेक्सी से जा रहे थे, स्टेशन के समीप एक होटल से प्रातः युवक युवतियों की भीड़ निकली। मैंने मेरे मित्र महेन्द्र जैन से जिज्ञासा से पूछा, सुबह यह भीड़ कहाँ से आ रही है। उन्होंने मुझे बताया शनिवार को रात में युवक होटल जाते हैं, वहाँ रात भर खाना पीना, नाचना गाना और अनैतिक

कार्य करते हैं। प्रातः होटल से निकलकर अपने आवास पर जाकर सो जाते हैं। रात भर मौज मस्ती करना, फिर प्रातः आवास पर जाकर सो जाना, बहुत ही अशोभनीय आदत है। इस गंदी आदत से ग्रसित युवक युवती परिवार एवं समाज का नुकसान कर रहे हैं। स्वयं के जीवन को भी निराशाजनक बना रहे हैं।

इसलिये सोने का एक नियम बतायें आयुर्वेद विशेषज्ञों की मानें तो अतिरिक्त नींद और मोटापे के बीच एक कनेक्शन है। यदि आप लंबे समय तक सो रहे हैं तो आप इस अवधि के लिये शारीरिक रूप से निष्क्रिय हैं। कम शारीरिक गतिविधि का मतलब है कि आपका शरीर कम कैलोरी खर्च कर पा रहा है। जिससे आपका वजन बढ़ने लगता है स्लीप पत्रिका में प्रकाशित सन् 2008 के एक शोध अनुसार लंबे समय तक सोने से भविष्य में वजन बढ़ने के अलावा हाई ब्लड प्रेशर और हाईब्लड शुगर की आशंका हो जाती है इसलिये अपने सोने की अवधि को 8 घंटे से ज्यादा ना बढ़ायें जब आपका शरीर स्वस्थ रहेगा तभी आप अपने लिये, अपने परिवार के लिये और अपने समाज के लिये हटकर पायेंगे। क्योंकि युवा शक्ति ही वह शक्ति है जो अपने परिवार में अपने देश में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। वैसे भी कहा गया है युवा शक्ति ही देश की कर्णधार है। भारतीय युवा शक्ति में आ रही विकृतियों पर विराम लगाना देश हित एवं समाज हित में है।

कविता

कितना तूफां मचाया है प्रलय के इशारों ने

कितना तूफां मचाया है प्रलय के इशारों ने
वैसाखियाँ छीन ली हैं जब मेरे सहारों ने
बागवां परेशां है देखकर यह अजूबा
करी क्षार से यारी जब खुद बहारों ने
आकाश में अब अमन की गुंजाइशें नहीं
अदावत जब खुद ही कर दी है सितारों ने
नाखुदाओं पर भरोसा मैं कैसे करूँ
डुबा दी जिन्दगी की कश्ती ही जब किनारों ने
दुल्हन के सिंगार बेनूर हो गये
रंग फीका कर दिया मौत के कहरों ने
इंसाफ क्या मिलेगा इजलास में हमें
सियासत लूट ली है जब सिपाह सलारों ने



मूकमाटी: एक जीवन दृष्टि

* श्रीमती मीना जैन, औबेदुल्लागंज *

मूकमाटी महामनीषी महान संत आचार्य श्री विद्यासागर द्वारा रचित एक कालजयी कृति है जो अपने अंतर्स में संपूर्ण जीवन दर्शन को समाहित किये हुये हैं। यह महाकाव्य एक ऐसा जीवन संगीत है, जो जीवन प्रत्येक क्षेत्र यथा राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक जीवन की सुरीली सरगम सुनाता है। मानव पर्याय प्राप्त करना और उसे सार्थक बनाना प्रत्येक कर्मण्य व्यक्ति का लक्ष्य होता है। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये मूकमाटी जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनाने का संदेश देती है। मूकमाटी ऐसा महाकाव्य है, जो मानव को जीवन जीने की कला प्रदान करता है। आचार्य श्री विद्यासागर स्वयं मूकमाटी की भूमिका मानस् - तरंग में लिखते हैं, जिसका प्रयोजन सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, और धार्मिक क्षेत्रों में प्रविष्ट हुई, कुरीतियों को निर्मूल करना, और युग को शुभ संस्कारों से संस्कारित कर भोग से योग की ओर मोड़ देकर वीतराग श्रमण संस्कृति को जीवित रखना है।

महाकाव्य के आरंभ में ही, माटी जैसी तुच्छ पर्याय में जीवन उन्नत करने की भावना को माँ धरती के आशीर्वाद दृष्टिकोण द्वारा व्यक्त करते हुये, आचार्य श्री कहते हैं-

सत्ता शाश्वत होती है बेटा प्रति सतता में होती है।

अनगिन संभावनायें, उत्थान पतन की,

खस खस के दाने सा बहुत छोटा होता है।

वड़ का बीज वह समुचित क्षेत्र में उसका वपन हो

समयोचित खाद, हवा, जल उसे मिलें

अंकुरित हो कुछ ही दिनों में विशाल काय धारण कर,

वट रूप में अवतार लेता है। पृष्ठ 07

जब हम किसी कार्य को प्रारंभ करें तो हमें उस कार्य के प्रति पूर्ण आस्था होनी चाहिये, इसके लिये महाकवि कहते हैं -

आस्था से वास्ता होने पर रास्ता स्वयं शास्ता होकर

संबोधित करता साधक को साथी बन साथ देता है।

आस्था के तारों पर ही, साधना की अंगुलियांचलती है साधक की

सार्थक जीवन में तब स्वरातीत सरगम झरती है। पृष्ठ 09

उन्नत जीवन की ओर अग्रसर होने के पश्चात् भी असफलता का सामना करना पड़ता है तब महासंत कवि साधक को संदेश देते हुये कहते हैं-

साधना के क्षेत्र में स्वलन की संभावना पूरी बनी रहती है, बेटा

स्वस्थ प्रौढ़ पुरुष भी क्यों न हो

काई लगे पाषाण पर पद फिसलता ही है।

इसलिये सुना आयास से डरना नहीं आलस्य करना नहीं। पृष्ठ 11

प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुये लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, इसके लिये महाकवि कहते हैं -

संघर्षमय जीवन का उपसंहार नियम से हर्षमय होता है। पृष्ठ 14

कभी-कभी कार्य का संपादन करने के पश्चात लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है तब संप्रेषण का सही स्वरूप बताते हुये महाकवि कहते हैं-

विचारों के ऐक्य से आचारों के साम्य से

संप्रेषण में निखार आता है बिना बिखराव उपयोगी की धारा का

दृढ़- तटों से संयत सरकन-शीला सरिता- सी

लक्ष्य ओर बढ़ना ही संप्रेषण का सही स्वरूप है। पृष्ठ 22

लक्ष्य प्राप्ति में विचार और आचार में एकता होनी चाहिये तथा उपयोग की धारा, आचार और विचार के तटों में बांधकर लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिये। इस तरह से श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनाने के सूत्र घटनाओं के माध्यम से महाकवि संत आचार्य श्री विद्यासागर जी ने मूकमाटी में पिराये हैं।

नारियों के साथ दुर्व्यवहार, जन्म के पूर्व सा जन्म के पश्चात हत्या, जलाना आये दिन की घटनायें हैं, जिसके परिणाम स्वरूप भारत में पुरुष- स्त्री अनुपात घटा है। महाकवि संत श्री विद्यासागर जी द्वारा की गई, नारी शब्द के सभी पर्यायवाची शब्दों की व्याख्या नारी की महत्ता प्रकट करती है। महाकवि के शब्दों में इनका सार्थक नाम है नारी

यानी न अरि नारी

अथवा ये आरी नहीं है सो - नारी। पृष्ठ 202

अबला शब्द की व्याख्या करते हुये आचार्य श्री कहते हैं-

बला यानी समस्या- संकट है।

न बला सो अबला। पृष्ठ 203

कुमारी शब्द का विश्लेषण महाकवि के शब्दों में-

कु यानी पृथिवी, मा यानी लक्ष्मी, री यानी देने वाली, इससे भाव निकलता है।

यह धरा सम्पदा सम्पन्ना, तब तक रहेगी, तब तक यहाँ कुमारी रहेगी। पृष्ठ 204

स्त्री शब्द की व्याख्या करते हुये महाकवि ने कहा है-

स यानी सम-शील-संयम, त्री यानी तीन अर्थ है

धर्म, अर्थ, काम पुरुषार्थों में, पुरुष को कुशल संयत बनाती है।

सो स्त्री कहलाती है। पृष्ठ 205

दुहिता शब्द का अर्थ बताते हुये महाकवि कहते हैं-

दो हित जिसमें निहित है, वह दुहिता कहलाती है

अपना हित स्वयं ही कर लेती है, पतित से पतित पति का जीवन भी

हित सहित होता है, जिससे वह दुहिता कहलाती है। पृष्ठ 205

अंगना शब्द की सार्थक व्यंजना महाकवि के शब्दों में

मैं अंगना हूँ, परंतु मात्र अंगना ना हूँ..... कुछ और भी हूँ मैं.....।

अंग के अंदर भी कुछ झांकने का प्रयास करो।

अंग के सिवा भी कुछ मांगने का प्रयास करें। पृष्ठ 207

भारत की राजनीति में भ्रष्टाचार घोटाले, जोड़- तोड़ पदलिप्सा का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। उसका अंत कैसे किया जा सके, महाकवि न विभिन्न घटनाओं के माध्यम से कथा सूत्र में पिरोया है।

महाकवि की शासन शय्या, फूलवती नहीं, शूलशीला हो

अन्यथा राजसत्ता वह राजसता की रानी राजधानी बनेगी। पृष्ठ 104

पदलिप्सा व्यक्ति को अनर्थ की ओर अग्रसर करती है, उसे कैसे रोका जाये महाकवि लिखते हैं -

पद वाले ही पदोपलब्धि हेतु, पर को पददलित करते हैं

पाप पाखंड करते हैं, प्रभु से प्रार्थना है कि

अपद ही बने रहें हम, जितने भी पद हैं वह विपदाओं के आस्पद हैं। पृष्ठ 434

आये दिन भारतीय राजनीतिज्ञ अपने वेतन भत्ते बढ़ाते रहते हैं, उसके दुष्परिणाम का उल्लेख करते हुये महाकवि लिखते हैं -

वेतन वाले, वतन की ओर कम ध्यान दे पाते हैं

और चेतन वाले तन की ओर, कब ध्यान दे पाते हैं। पृष्ठ 123

धर्म की आड़ लेकर राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं तब उसका जो प्रतिफल होता है उसका वर्णन महाकवि के शब्दों में-

धर्म का झंडा डंडा बन जाता, शास्त्र शस्त्र बन जाता है।

अवसर पाकर, प्रभु स्तुति में तत्पर, सुरीली बांसुरी भी बांस बन पीट सकती है। पृष्ठ 73

जमाखोरी धनलिप्सा समाज में विषमता उत्पन्न करती है जिससे वर्ग संघर्ष होता है। उससे कैसे मुक्त हो सकते हैं आचार्य श्री कहते हैं-

अब धन संग्रह नहीं जन संग्रह करो, ओर लोभ के वशीभूत हो।

अंधा धुन्ध संकलित का, समुचित वितरण करो।

अन्यथा धन हीनों में चारी के भाव जागते हैं जागे हैं। पृष्ठ 467

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर ने सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में प्रविष्ट हो चुकी कुरीतियों के निर्मूलन हेतु विभिन्न सूत्र प्रदान किये हैं, जिससे वे अपने प्रयोजन को पूर्ण करने में पूर्णतः सफल रहे हैं। मूकमाटी महाकाव्य एक ऐसा सागर है जिसमें जीवन जीने की कला के सूत्र रत्न समहित हैं। रत्न पारखी आस्थावान पुरुष उन रत्नों को खोजकर अपने जीवन को जगमगाकर मुक्ति पथ को प्रशस्त कर सकता है।

फुटकर व्यापार का रचनात्मक विनाश

✽ प्रियांक समग्र जैन ✽

मेरे परिवार में मुख्य तौर पर रिटेल/खुदरा/फुटकर व्यापार का चलन रहा है। किसी की कपड़े की दुकान, किसी की साड़ी की, किसी की इलेक्ट्रॉनिक्स, किसी की गल्ला मंडी में अनाज की दुकान, और किसी की, जैसी कि मेरे अपने घर में है, किराने के दुकान। खुदरा खासकर 2000 से 2010 के दौर में ऐसे व्यापारी मध्यम वर्ग में बने रहें। उसके पहले के समय की मैंने बातें सुनी हैं, लेकिन अनुभव नहीं है। 2010 के बाद से खुदरा व्यापार में सतत गिरावट जारी है। बहुत से परिवारों की आय मध्यम वर्ग श्रेणी से घटकर निम्न- मध्यम-वर्ग श्रेणी में जा चुकी है।

आप शहर के बाजारों में जाकर घूमिये, तो मायूस चेहरे नजर आयेंगे। व्यापार के भविष्य में गहरी अनिश्चयता है। वर्तमान दौर बहुत कठिनाई से गुजर रहा है। खुदरा व्यापारियों के परिवार कमजोर और परास्त नजर आ रहे हैं। बदले हुये अर्थव्यवस्था के ढाँचे ने, जिसमें बड़े-बड़े मॉल्स, रिटेल स्टोर, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, और नया उभरा सर्विसेज से आय कमाने वाला खरीददार वर्ग शामिल हैं, खुदरा व्यापार के परम्परागत ढाँचे को ध्वस्त कर दिया है।

कुछ विद्वान इसे सृजनात्मक विनाश या विध्वंस (Creative Destruction) भी कह सकते हैं। हालांकि मेरी नजर में यह मूर्खतापूर्ण और संवेदनहीन मुहावरा है। कौन हैं खुदरा व्यापारी? किसी उम्र के हैं? क्या वह बदली हुई अर्थव्यवस्था से दो-दो हाँथ कर पाने में सक्षम भी हैं? क्या उन अंधेरे उम्र के दुकानदारों में इतनी ऊर्जा और चाव बचा है? इस विध्वंस में उनकी आर्थिकी ही नहीं बिखर रही है। पूरी की पूरी सामाजिकता बिखर रही है। क्योंकि अर्थव्यवस्था का बदला हुआ ढाँचा अपने साथ नई सामाजिकता बिखर रही है क्योंकि अर्थव्यवस्था का बदला हुआ ढाँचा अपने साथ नई सामाजिकता भी लाया है। इस नई सामाजिकता में परस्पर - निर्भरता और आत्मीयता के सभी सम्बन्ध टूट रहे हैं। छटपटाहट सी महसूस होती है एकदम।

ऐसा लगता है कि जैसे बड़े शहरों से बाजारवाद और आधुनिकता एक गुरिल्ला सेना की तरह छोटे शहरों की तरफ कूच किये हुये हैं खुदरा व्यापारी, एक अनभिज्ञ और खराब तैयारी के साथ उसके सामने दीवार बनके खड़े होने को मजबूर हैं। जिस लड़ाई को हाल ही में अभी किसानों ने लड़ा- बड़ी पूँजी के किसानों में निरंकुश प्रवेश के सम्बंध में। उस लड़ाई को खुदरा व्यापारियों को लड़ने का अवसर ही नहीं मिला। क्योंकि अर्थव्यवस्था के जिन क्षेत्रों में पहले बदलाव आया, उन क्षेत्रों में उत्पन्न हुई समृद्धि से मध्यम वर्ग बना जिसने, खुदरा व्यापारियों को लाभ दिया। लेकिन वही बदलाव जब खुदरा व्यापार में आये तो खुदरा व्यापारी, उस टर्निंग पॉइंट / घातक मोड़ को पकड़ नहीं पाये। बहुत से मुहावरें हैं सप्लाई चैन

एफिशिएंसी (Supply Chain Efficiency) वैल्यू अडिशन (Value Addition) वगैरह-वगैरह जिन्हें इस्तेमाल में लाकर बड़ी पूँजी खुदरा व्यापार में घुसी है।

पता नहीं क्यों बड़ी पूँजी का यह व्यवहार होता है कि वह और सभी को अपने अधीन कर लेना चाहती है। वह शेर नहीं करती, अपितु और सभी को अपने आश्रित बनाती है। और जो लोग आश्रित हो जाते हैं ना तो उनकी सामाजिकता बचती है और न ही संस्कृति। खुदरा व्यापारी, जो कि खासकर बनिया, सिंधी, और जैन समाज से आते हैं, अपनी सामाजिकता को धर्मान्धता की संकीर्णता से बचाने में लगे हुये हैं। और उनकी सामाजिकता की आर्थिकी पर छिड़े युद्ध का समर्थन करने वाली राजनीति से अनभिज्ञ भी हैं। अतः जल्द ही खुदरा व्यापारियों को अपनी सामाजिकता बचाने में तो वो लुम्पेन बन जायेंगे। और अपनी आर्थिकी को बचाने के लिये उन्हें अपनी राजनीति आवाज बुलंद करनी होगी।

कविता

महिमा है जिनबिम्ब की

जिनबिम्बों की महिमा अनुपम, जिन आगम में गायी है
इनके दर्शन करने से नशती, मिथ्या कजराई है
निधिति कर्म निकाचित भी की, मिटती पूर्ण निशानी है
जिनबिम्बों के दर्शन से ही, राह मिले कल्याणी ॥
पत्थर धातु पूज्य नहीं है, पूज्य सदा जिन मूर्त है
वीतराग जिन मुद्रा में, भगवंतों की सूरत है
जिन गुण जिनबिम्बों में दिखते, मोक्षमार्ग अनुरागी है
सम्यग्दर्शन पाने हेतु, वीतराग सरधानी है।
शिवमग के संस्कार मिले, नित जिन बिम्बों दर्शन से
कर्म कटे भव दुःख मिटें बस, जिनबिम्बों के परसन से
बिजली गिरती परवत तो, पर्वत चूर चूर हो तो
जिन बिम्बों दर्शन से तो मिथ्यामत खंडित होता।



दूसरे के सुख से दुखी क्यों ?

✳ डॉ. रेखा जैन, शिकोहाबाद ✳

आज भौतिकता की चकाचौंध में आदमी जीवनयापन कर रहा है और उसकी सोच भी नकारात्मक होती जा रही है जो इंसान को गर्त की ओर ले जा रही है। सकारात्मक सोच घटती जा रही है और इंसान दुखी रहता है और वो मानसिक रोगों से ग्रस्त हो रहा है। आज इंसान अपने दुख से दुखी नहीं दूसरे के सुख से ज्यादा दुखी हो रहा है। और अशांति की और अग्रसर हो रहा है और अनेक प्रकार की बीमारियों से जूझ रहा है। यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो कमी में भी गुणों को ढूँढ़ें और यदि सुखी रहना चाहते हो तो हर समय कमियां ढूँढ़ते रहें। सोच साकारात्मक रखें।

लोग ईर्ष्या तब करते हैं तब वे अपने जीवन में संतुष्ट नहीं होते। जब वे संतुष्ट नहीं होते तब वे खुश नहीं होते। वे स्वयं को आनंदित व सुखी महसूस नहीं कर पाते। अतः ऐसे लोग अपनी खुशियों में खुश ना रहकर दूसरों की खुशियों से दुखी रहते हैं। ईर्ष्या एक भाव है जो किसी के पास कुछ ऐसा होने की वजह से आ सकती है, जो आप पाना चाहते थे या अगर किसी के पास कोई चीज आपसे ज्यादा है। अगर आप में किसी तरह की अपूर्णता है, जिसकी वजह से दूसरों के सामने आप अच्छा महसूस नहीं कर पाते हो, तो इससे भी कई बार ईर्ष्या पैदा हो जाती है। ईर्ष्या में मुख्य रूप से एक अपूर्णता का भाव छिपा होता है। यदि आप आनंद के भाव से पूरी तरह भरे हों, तो आपके भीतर किसी के भी प्रति ईर्ष्या का भाव नहीं होगा। जैसे ही आपको ये लगता है कि आपके बगल में बैठे आदमी के पास आपसे कुछ ज्यादा है और आप उससे खुद को कम महसूस करने लगते हैं तो ईर्ष्या का भाव पैदा होता है। अगर यहां आपसे बेहतर कोई दूसरा व्यक्ति मौजूद है तो ईर्ष्या पैदा हो सकती है। यदि आप खुद में मस्त हैं तो ईर्ष्या का कोई प्रश्न नहीं है।

मैं एक छोटे से उदाहरण सबके समक्ष रख रही हूँ। हमारे पड़ोस में एक सम्पन्न परिवार रहता है उनका काम सदा दूसरे के काम में कमी निकालना है। कभी किसी की उन्नति बर्दाश्त नहीं कर सकते। हमारे यहां पर नई कार आई तो ईर्ष्या जलन की आग भड़कने लगी और तब तक शांत नहीं होती जब तक दूसरे से मन की भड़ास न निकाल लें। दूसरे पड़ोसी से कहने लगी अरे ऐसी कार तो हम खड़े खड़े ले लेते लेकिन हम नहीं लाते इसके पीछे कारण है आज कल एकसीडेंट बहुत हो रहे हैं तो फिर हम मौत का क्यूं बुलावा दें। इतना सुनते ही मैं अपने को रोक नहीं पाई।

और मैंने जवाब दिया जब ऊपर से बुलावा आता है तो न डॉक्टर आता है ना ही दुआ काम आती है और ना दवा, ना मंत्र, ना तंत्र। और यदि सांसें बाकी है तो मुर्दे भी उठकर बैठ जाते हैं। सुनने के साथ एक दम चुप हो गई जैसे सांप सूँघ गया हो।

ईर्ष्या का सबसे मुख्य कारण सफलता क्योंकि जब आप सफल होने लग जाते हैं तो लोग आपसे जलने लग जाते हैं जैसे अगर किसी के घर में किसी की नौकरी लग गई तो सामने वाले घर में लड़ाई शुरू हो जाती है तो इसे कहते हैं ईर्ष्या, दरअसल लोग अपने दुख से दुखी नहीं हैं लोग दूसरों के सुख से दुखी हैं।

ईर्ष्या एक ऐसा शब्द है जो मानव के खुद के जीवन को तो तहस-नहस करता है औरों

के जीवन में भी खलबली मचाता है। यदि आप किसी को सुख या खुशी नहीं दे सकते हो कम से कम दूसरों के सुख और खुशी देखकर जलिये मत। यदि आपको खुश नहीं होना है न सही मत होइये खुश, किन्तु किसी की खुशियों को देखकर अपने आपको ईर्ष्या का आग में ना जलायें।

दूसरे की आलोचना टीका टिप्पणी करने से अच्छा है अपनी जिंदगी में लगे हुये मैल को साबुन रूपी समीक्षा के द्वारा धोकर साफ किया जाये। हर चीज बदली जा सकती है। अपनी जिंदगी में लगे हुये मैल को साबुन रूपी समीक्षा के द्वारा धोकर साफ किया जाये। हर चीज बदली जा सकती है सिवाय गिरी हुई सोच के। दूसरे के सुख से दुखी होने की सोच इंसान की प्रगति में बाधक बनती है और उसे अच्छे मुकाम तक नहीं पहुंचने देती।

कहने का तात्पर्य है कि इंसान ने अपने दुखों का इजाफा खुद किया। ईर्ष्या, जलन, स्वार्थ की प्रवृत्ति से खुद ही दुखी सुखी हो रहा है। आज इंसान इतना स्वार्थी हो गया कि उसके आगे कुछ नहीं दिखाई देता। अपनी स्वार्थ पूर्ति में चाहे जितना नुकसान हो उसे झेलने की क्षमता रखता है किन्तु स्वार्थ नहीं छोड़ता। इसलिये स्वस्थ मानसिकता में जीना चाहिये जो हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहे। मैं उन लोगों को चेतावनी देती हूं गलत काम का नतीजा बुरा ही होता है।

अफसोस की बात है आज के समाज की कि लोगों के दुःख को देखकर बहुत दुखी होते हैं सहानुभूति जताते हैं लेकिन किसी की खुशी को देखकर खुशी नहीं होते। किसी उन्नति से किसी के गुणों से जलते हैं और दुखी होते हैं पूरा प्रयास करते हैं कि सामने वाले का बुरा हो। हम सभी को इससे बचना चाहिये।

अक्सर समाज में देखा जाता है कि कोई बढ़ रहा है, किसी की उन्नति हो रही है, नाम हो रहा है किसी का अच्छा हो रहा है तो अधिकांश लोग ऐसे देखने को मिलेंगे जो पहले यह सोचेंगे, कैसे आगे बढ़ते लोगों की राह का रोड़ा बना जाये। उनको कैसे नीचा दिखाया जाये। कैसे समाज में उनकी मजाक बने और कैसे उनकी खुशियों छीनी जायें।

बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो किसी को आगे बढ़ता देख किसी की उन्नति होते देख आनंद का अनुभव करते हैं या खुश होते हैं। एक मुक्तक के माध्यम से अपने मन के भाव को शब्दों का बाना पहनाया है देखिये:-

कपट खाद से फसल उगाकर, खूब कमायें नोट।

अंत समय कुछ काम न आया, भूल गये सब वोट।

मरघट के लिये घर से चला, रोता सब परिवार।

खोटे धन से भरी तिजोरी, शूल दिलाये चोट।

आज इंसान इस बात से दुखी नहीं होता कि उसकी जिंदगी में दुख है वह इस बात से ज्यादा दुखी है कि दूसरी की जिंदगी में उससे ज्यादा सुख है। इसी बात को लेकर वो ईर्ष्य से भर जाता है ईर्ष्या बोलने में एक आम समस्या लगती है लेकिन अगर यह बढ़ जाये तो हमें इसके बारे में तुरंत सोचना और समझना चाहिये। अगर हम लगातार किसी से ईर्ष्या कर रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि या तो हमारे में आत्मविश्वास की कमी है हम उसकी सफलता से बहुत ज्यादा दुःखी है।

माँ बचाओ अभियान चलाना समय की आवश्यकता

*** विजय कुमार जैन, राघौगढ़ ***

हम 8 मई को विश्व मातृत्व दिवस मनाकर मातृशक्ति को देश एवं दुनिया में सशक्त बनाने का शुभ संकल्प लेते हैं। वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई रानी लक्ष्मी दुर्गावती, महारानी अहिल्या देवी, महान स्वतंत्रता संग्राम सैनानी सरोजनी नायडू, पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी आदि अनेक महान वीरांगनायें भारत में हुई जिन्होंने देश दुनिया में अपनी वीरता, अदम्य साहस से भारत का गौरव बढ़ाया और दुनिया में उन्हें सम्मान पूर्वक स्मरण किया जाता है। महिला शक्ति को समानता दिलाने भारत में शासकीय स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। इन सभी प्रयासों से आज महिलाओं का सम्मान जनक स्थान तो मिल रहा है, मगर नकारात्मक पक्ष यह है महिला के नाम पर राजनीति करने की परंपरा सरपंच, नगर पालिका अध्यक्ष, जनपद, जिला पंचायत अध्यक्ष अनेक पदों पर चल रही है। पत्नी के नाम पति राजनीति कर रहे हैं। इस प्रचलन में क्या नारी शक्ति को मिले आरक्षण का लाभ एवं वास्तविक सम्मान मिल रहा है यह विचारणीय प्रश्न है।

आज हम विश्व मातृत्व दिवस के पावन अवसर भारत में आम महिला की क्या स्थिति हैं, उसे जानने का प्रयास कर रहे हैं। भारत वर्ष में सरकार द्वारा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान चलाया जा रहा है। बालिकाओं के जन्म दर में आ रही कमी के कारण यह अभियान प्रारंभ किया गया है। बेटी को इस दुनिया में आने से पहले ही माँ की कोख में भ्रूण हत्या कर दी जाती है। इस घिनौने अमानवीय कृत्य की सभी ओर से आलोचना हो रही है। देश में प्राइवेट नर्सिंग होम्स एवं अस्पतालों में यह धंधा जोरशोर से जारी है। गर्भपात कानूनी रूप अपराध है मगर गैर कानूनी रूप से यह कारोबार जारी है।

बेटियाँ कैसे बच सकती हैं, जब तक उनकी माँ के बचने की गारंटी न हो। हमारा मानना है बेटी बचाओ अभियान से पहले माँ बचाओ अभियान चलाने की तत्काल आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट को हम देखें तो सबसे ज्यादा माताओं की मृत्यु प्रसव के दौरान होती है। विगत वर्षों में जारी रिपोर्ट संघ की उक्त रिपोर्ट का हम गहन अध्ययन करते हैं तो पाते हैं प्रतिदिन भारत में 137 महिलाओं की मृत्यु होती है। माताओं की असमय मृत्यु के अलग-अलग कारण हैं। असामयिक मृत्यु का कारण चिकित्सा सुविधाओं का अभाव तो है ही कुपोषण भी मृत्यु का प्रमुख कारण है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख है भारत में 15 से 35 वर्ष की महिलायें बड़ी संख्या में खून की कमी का शिकार हैं। हमारे देश में सदियों से बाल विवाह कुप्रथा जारी है कम उम्र में ही युवतियां माँ बन जाती हैं। जीवन के सबसे बड़े निर्णय विवाह के बारे में एवं माँ बनने के बारे में उनसे सहमति तक नहीं ली जाती है। इसका कारण समाज में हमेशा महिला को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। समाज में आज भी यह धारणा है कि पत्नी का अर्थ उसके वंश एवं परिवार को बढ़ाना है। महिला के बारे में समाज की इस घटिया सोच बदलने जन अभियान चलाने की आवश्यकता है। समाज में भी महिलाओं का आदर्शपूर्ण स्थान रहा है वह स्थान हमें रखना चाहिये।

सन् 1994 में संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन में इस महत्वपूर्ण तथ्य को स्वीकार किया है कि महिला के स्वास्थ्य के बारे में एक मात्र उस समय न सोचा जाये, जब वह गर्भवती हो, बल्कि महिला के स्वास्थ्य योजनायें पर हमेशा ध्यान देने की आवश्यकता है। महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति केन्द्र एवं राज्य सरकारें भले ही सजगता से स्वास्थ्य योजनायें बना रही है मगर उन योजनाओं का ईमानदारी से क्रियान्वयन नहीं हो रहा है। जननी सुरक्षा योजना में प्रायः सभी दूर भारी भ्रष्टाचार हो रहा है। प्रसूता महिला को जो 1400/- रुपये की सहायता चेक से दी जाती है उसे चेक को देने में स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रसूता के परिजनों से सौदेबाजी की जाती है। प्रायः महिला चिकित्सक रात्री में प्रसूति कराने नहीं आती, अगर आ जाती है तो प्रसूति के समय शिशु रोग विशेषज्ञ का होना आवश्यक है। एक दूसरे के नहीं आने से प्रसूति में विलम्ब होने पर जच्चा-बच्चा दोनों ही मृत्यु की गोद में चले जाते हैं।

गर्भावस्था में सोनोग्राफी से अवैध रूप से पता चल जाता है कि गर्भ में बेटे के स्थान पर बेटा है। बालिका भ्रूण हत्या में माँ की सहमति की बात अधिकांश लोग कहते हैं। वे कहते हैं माँ अपनी बच्ची को मारना न चाहे तो कोई उसे कैसे मार सकता है। गर्भ में पल रही बच्ची का गर्भपात करने पर महिला पर पति एवं परिवार का इतना दबाव रहता है वह महिला इंकार करने की स्थिति में नहीं रहती है। यह हम भूल जाते हैं हर समय हर दिन राज अपना सुख चैन भूलकर परिवार में काम और कर्तव्य का सारा बोझा ढोने वाली माँ का स्थान परिवार में सबसे निचले पायदान पर होता है। उसकी आवाज बहुत कम सुनी जाती है। परिवार के दबाव एवं परिवार की पुत्र प्राप्ति की चाहत समाज के हर वर्ग में इतनी है कि एक के बाद एक होती हत्यायें तथा कथित सहिष्णु एवं संवेदनशील समाज को बुरी नहीं लगती है। हर वर्ष गर्भधारण एवं गर्भपात माँ को गंभीर बीमारियों से पीड़ित बना देता है।

माँ की हो रही दुर्दशा में समाज द्वारा बनाई रूढ़िवादी प्रथा ही दोषी है। माँ को हम कितने रूप में देखते हैं एवं माँ का कौन-कौन सा रूप आदर्श प्रस्तुत करता है। वह परिवार में सबसे पहले उठती है, सबसे बाद में सोती है। जो सबके खाने में बाद में खाती है। परिवार में चार बच्चे हैं और रोटी चार है तो माँ कह देती है मुझे आज भूख नहीं है तुम चारों मिलकर खा लो। कभी बीमार हो तो बीमारी का पता नहीं चलने देती है। चाहे थकी क्यों न हो, वह किसी काम को करने के लिये उफ नहीं करती है। कर्तव्य परायण होती है, यह नहीं सबके स्वास्थ्य दीर्घायु, घर के वैभव, जमीन जायदाद के लिये व्रत उपवास भी उसी के हिस्से में आते हैं। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा है।

महिला का स्वास्थ्य ठीक रहे तो देश की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो सकता है। आखिर किसी भी देश की आर्थिक क्षमता सुधारने के लिये मानव संसाधन सबसे बड़ी ताकत है। इसलिये जब हम रोटी बचाओ अभियान को जोर शोर से चलाने की बात करते हैं, तो पहले उनके बारे में ध्यान देने और सही नीतियाँ बनाने की जरूरत है, जो इस दुनिया में बेटियाँ लाती हैं, अर्थात् माँ।



पत्र परीक्षा आचार्य विद्यानंदी जी का अद्भुत ग्रंथ

इस लघुकाय ग्रंथ में विभिन्न दर्शनों की अपेक्षा पत्र के लक्षणों को उद्धृत कर जैन दृष्टिकोण से पत्र का लक्षण दिया गया है तथा प्रतिज्ञा और हेतु इन दो अवयवों को ही अनुमान का अंग बताया है। प्रतिपाद्याशयानुरोध से दशावयवों का भी समर्थन किया है। पर ये दस अवयव न्यायदर्शन प्रसिद्ध दशावयवों से भिन्न है। पत्र का लक्षण बताते हुये लिखा है- पुनः प्रसिद्धावयवात्वादिविशेषणविशिष्ट वाक्य पत्र नाम तस्य श्रुतिपथसमाधिगम्यपदसमुदाय- विशेषरूपत्वात् पत्रस्य तद्विपरीताकारत्वात्। न च येद्यतोऽन्यवतेन व्यपदिश्यतेऽतिप्रसंगात्। नीलादयोऽपि हि कबलादिभ्योऽन्ये न। ते नीलादिव्यपदेशहेतवः तेषां तद्व्यपदेशहेतुतया प्रतीयमानत्वात् किरीशदीनां पुरुषे तद्व्यपदेशहेतुत्ववत् तद्योगात्तत्र मत्वर्थीय विद्यानात्। नीलादयः संति येषां ते नीलादयः कबंलादय इति गुणवच नेभ्यो मत्वर्थीयस्याभावप्रसिद्धेरिति चेत् उपचरितोपचारादिति क्रमः। इस प्रकार का लक्षण लिखकर अन्य मत मतान्तरों की विस्तारपूर्वक समीक्षा की गयी है। वाद विवाद के लिये प्रतिज्ञा और हेतु इन दो अवयवों को ही अनुमान के अवयव माने गये हैं। नैयायिक वैशेषिक मीमांसक, कपिल, सुगत आदि के मतों की समीक्षा करते हुये स्फोटवाद का भी निरसन किया है। बीच-बीच में प्राचीन आचार्यों के श्लोकों को उद्धृत किया गया है। इस प्रकार इस लघुकाय ग्रंथ में बाद विषयक चर्चा का समावेश किया है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जून 2022
मैं फूलों की रानी

प्रथम-

रंग बिरंगे फूलों में ही
खुशबू बसे अनूठी
सदा बहारों में रमती हूँ
मैं शहरों से रूठी
रस से सरस प्रकृति की रचना
अनुपम मैंने जानी
झर झर झरनों पर उड़ती हूँ
मैं फूलों की रानी
श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

स्वारथ संग निसंग ध्रुव मय

आतम अनुपम ज्ञानी
पुष्प रसों में डूबी रहती मैं
फूलों की रानी
अभिलाषा जैन, इंदौर

तृतीय-

एक भंवर ने जान गंवाई
मिला न दाना पानी
नासा की लोभी भटकी
मैं फूलों की रानी
राजकुमार जैन, भिलाई

वर्ग पहेली क्र. 271
मई 2022 के विजेता

प्रथम : श्रीमती आशा जैन, नागपुर
द्वितीय : श्रीमती, इन्दु जैन, भोपाल
तृतीय : श्रीमती राजश्री जैन, अहमदाबाद

माथा पच्ची

1. अ र् अ ग् आ स् क् र् अ स् आ सं
2. श् ए अ अ न् स् न् द अ जै
3. ई ण् क् अ न् द् उ अ न् द् व् आ कु
4. च् अ व् अ र् ह् अ त् अ न् अ अ
5. अ आ ध् द् अ श् र् शो

परिणाम :

जून 2022: (1) मूलाचार प्रदीप (2) मूलाचार
(3) स्वयंमू स्रोत (4) भरतेय वैभव (5) धर्म रत्नाकर

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।



पुराण प्रेरणा

आश्रव भावना का श्रेष्ठ चिंतन

अब्धौ सच्छिद्रनावीव भवेद्वार्यागमस्तथा ।

कर्मास्रवो भवाब्धौ स्यान्मिथ्यात्वादेश्च देहिनाम् ॥

पन्च मिथ्यात्वतो जन्तोर्द्वादशा विरतेर्भवेत् ।

पन्च वर्ग कषायाच्चा स्रवस्त्रि पन्चयोगतः ॥

आस्रवाद् भ्राम्यति प्राणी संसृताब्धि काष्ठवत् ।

अतः सर्वास्रवत्यक्तं चिद्रूपं शाश्वत भज ॥

जिस तरह समुद्र में पड़ी हुई सछिद्र नौका में छिद्र द्वारा जल आता है उसी तरह संसार समुद्र में पड़े हुये प्राणियों के भी मिथ्यात्व आदि के निमित्त से कर्मों का आस्रव होता है। पांच मिथ्यात्व, बारह अविरति, पच्चीस कषाय और पन्द्रह योग ये आस्रव के भेद हैं। आस्रव के निमित्त से जीव संसार-समुद्र में काठ की तरह तैरा करते हैं। इसीलिये तुझे चाहिये कि तू आस्रवों को छोड़कर एक चिद्रूप शाश्वत आत्मा को भजे।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

- 1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
- 2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
- 3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान - ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)

फोन: 0731-4003506 मो.: 8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

करियर



रेडियो में अवसर- रेडियो जॉकी

रेडियो पर प्रसारित किये जाने वाले कार्यक्रमों का संचालन रेडियो जॉकी के द्वारा किया जाता है, यदि आप की आवाज अच्छी है, उस आवाज के माध्यम से आप किसी को भी प्रभावित कर सकते हैं, तो आपके लिये रेडियो जॉकी को करियर के रूप में चुनाव करना एक बेहतर निर्णय है, इसके माध्यम से आप काफी प्रसिद्ध हो सकते हैं, और लोग आपका प्रोग्राम सुनने के लिये पहले से इंतजार किया करते हैं, यदि आपका प्रेजेंटेशन बहुत अच्छा है, लोग स्वयं ही आपकी तरफ आकर्षित हो जायेंगे और इस प्रकार आप के श्रोताओं की संख्या में निरंतर वृद्धि होती रहेगी, एफएम के कारण इस क्षेत्र में जॉब के अवसरों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

योग्यता: रेडियो जॉकी बनने के लिये कोई प्रोफेशनल कोर्स करना अनिवार्य नहीं है, परन्तु आप अपने गुणों को निखारने के इसे कर सकते हैं, इसके लिये आप बारवी की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद डिग्री या डिप्लोमा कोर्स करने के लिये किसी संस्थान में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं, वर्तमान समय में लगभग प्रत्येक राज्य में अनेक शिक्षण संस्थान उपलब्ध है, जिनकी सहायता से आप यह कोर्स आसानी से कर सकते हैं।

कोर्सेज- डिप्लोमा इन रेडियो प्रोग्रामिंग व ब्रॉडकास्ट मैनेजमेंट।
डिप्लोमा इन रेडियो प्रोडक्शन व रेडियो जॉकी।
सर्टिफिकेट कोर्स इन रेडियो जॉकिंग।

मुख्य संस्थान- रेडियो सिटी स्कूल ऑफ ब्रॉडकास्टिंग, मुम्बई।
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, नई दिल्ली।
जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन, मुम्बई।
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
द मुद्रा इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, अहमदाबाद।
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, विभिन्न केन्द्र

जॉब के अवसर- इस क्षेत्र में रोजगार आपको सॉफ्टवेयर प्रोड्यूसिंग कंपनी और एंकरिंग दोनों क्षेत्रों में अच्छा विकल्प प्राप्त होगा, महत्वपूर्ण बात यह है, कि ऑल इंडिया रेडियो प्रत्येक तीन महीने पर रेडिया जॉकी के लिये ऑडिशन कराता रहता है, जिसमें आप प्रतिभाग ले सकते हैं, इस क्षेत्र में आपको ऑल इंडिया रेडिया एफ एम, टाइम्स एफ एम, रेडियो मिड-डे सॉफ्टवेयर प्रोड्यूसर आदि रेडिय स्टेशन के लिये जॉब के लिये आवेदन कर सकते हैं।

वेतन- इस क्षेत्र में फ्रेशर के रूप में 12-20 हजार रुपये प्रतिमाह की जॉब आसान से पा सकते हैं। अनुभव बढ़ने पर इसमें वृद्धि होती रहती है।

दुनिया भर की बातें



■ 1 मई

-रांची: ईडी को आ.ए.एस पूजा सिंघल के खाते में 1.43 करोड़ केश जमा मिले।

-जम्म कश्मीर: बड़गाम जिले में बादल फटने से तीन मजदूरों की मौत।

-सहारनपुर में हाजी इकबाल की 21 करोड़ की बेनामी संपत्ति सीज।

■ 2 मई

- यूक्रेन के ओडेसा पर रूसी मिसाइल हमला एक बच्चे की मौत पांच जखमी।

- भारत जर्मनी के बीच व्यापार संबंधों को बेहत के तरीकों पर चर्चा हुई।

- बॉम्बे अखबारों में देवी देवताओं के तस्वीरों के प्रकाशन पर बैन वाली याचिका खारिज हुई।

■ 3 मई

- जोधपुर हिंसा में अब तक 97 लोग गिरफ्तार हुये अगले आदेश तक इंटरनेट सेवा बंद हुई।

- पूर्वी यूक्रेन में रूस का बड़ा हमला हुआ 10 की मौत हुई और 15 घायल हुये।

- डेनमार्क में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बोले भाषा कोई भी हो हमारे संस्कार भारतीय ही हैं।

■ 4 मई

- बी.एम.सी ने राणा दंपति के खिलाफ अवैध निर्माण के लिये नोटिस जारी किया।

- यमुनोत्री धाम की यात्रा के पहले दिन 3 यात्रियों की मौत हुई।

- लाउड स्पीकर विवाद पर राजठाकरे बोले ये एक दिन का आंदोलन नहीं निरन्तर जारी रहेगा। हनुमान चालीसा करते 250 एम.एन.एस कार्यकर्ता गिरफ्तार हुये।

■ 5 मई

- कोरोना मौत पर डब्ल्यू.एच.ओ की रिपोर्ट पर भारत ने आपत्ति जताई।

- आजमखान को नहीं मिली जमानत हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा।

- सांसद नवनीत राणा के विधायक पति रविराणा भी जेल से रिहा हुये।

■ 6 मई

- श्रीलंका के राष्ट्रपति ने एक बार फिर आपातकाल घोषित किया।

- काशी विश्वनाथ: ज्ञानवापी विवाद आजसर्वेखत्म हुआ कल फिर 3 बजे सर्वे होगा। मस्जिद के बाहर जमकर हुआ हंगा।

- अनंतनाग में सुरक्षाबलों और दहशत गदों के बीच मुठभेड़ अब तक दो आतंकी मारे गये।

■ 7 मई

- भारत की सीमा में पाकिस्तानी ड्रोन घुसा बी.एस.एफ ने 8 राउंड फायरिंग की।

- कर्नाटक: कांग्रेस से इस्तीफा देने के कुछ घंटे बाद ही प्रमोद माधवराज बीजेपी शामिल हुये।

- सुप्रीम कोर्ट के जज बनाने के लिये सुधांशु धुलिया और जमशेद बी की शिफारिश पर सरकार ने मुहर लगाई।

■ 8 मई

- डी.एम. के सासंद टी सिवा के बेटे सूर्या शिवा बीजेपी में शामिल हुये।

- हिमाचल प्रदेश पुलिस पेपर लीक मामले में चार और आरोपी गिरफ्तार।

- मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) में माफियां संजीव माहेश्वरी उर्फ जीवा की 4 करोड़ की संपत्ति जब्त हुई।

■ 9 मई

- मोहाली में इंटेलिजेंस दफ्तर में राकेट जैसी चीज से धमाका हुआ।

- शाहीनबाग में अतिक्रमण विरोधी अभियान में बाधा डालने पर एम.एल.ए अमानतुल्लाखान पर एफ आई आर दर्ज हुई।

- श्रीलंका में हालात बिगड़े हिंसा में 5 लोगों की मौत हुई भीड़ ने राजपक्ष का पुश्तैनी घर फूँका।

■ 10 मई

- बीपीएससी पेपर लीक मामले में बीडीओ जयवर्धन गुप्ता को गिरफ्तार किया गया

- सपा नेता आजमखान को इलाहबाद हाईकोर्ट ने जमानत दे दी।

- ए.एस.ए.एन.आई. चक्रवात में उड़ीसा के तट पर पलटी नाव 60 लोगों को बचाया गया।

■ 11 मई

- पाकिस्तान में हिन्दू मंदिर पर तोड़फोड़ करने पर 22 लोगों को पांच-पांच साल की सजा हुई।

- मोहाली हमला में पंजाब पुलिस ने फरीद कोट से सोनू को गिरफ्तार किया।

- झारखंड: ईडी ने लम्बी पूछताछ के बाद आई.ए.एस अधिकारी पूजा सिंघल को गिरफ्तार किया।

■ 12 मई

- जम्मू-कश्मीर: राहुल भट्ट की हत्या को लेकर कश्मीरी पंडितों का विरोध प्रदर्शन जारी।

- त्रिपुरा: सी.एम.माणिक साहा सहित बीजेपी प्रतिनिधि मंडल गवर्नर हाउस के लिये रवाना हुये।

- यू.ए.ई. के राष्ट्रपति शेख खलीफा बिन जायद नाहयान की मौत हुई।

■ 13 मई

- मुंडका हादसा: कंपनी ने मालिक हरीश गोयल और वरुण गोयल को हिरासत में लिया गया।

- पटना हाईकोर्ट ने सुब्रत रॉय के खिलाफ अरेस्ट वारंट जारी किया।

- मथुरा कोर्ट ने विवादित स्थल का

सर्वे कराने की मांग वाला प्रार्थना पत्र स्वीकार।

■ 14 मई

- अभिनेता अक्षय कुमार कोरोना पॉजीटिव ट्विटर पर जानकारी दी।

- उत्तरप्रदेश के सहारनपुर में हाजी इकबाल की 107 करोड़ की संपत्ति कुर्क हुई।

- शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान होंगे संयुक्त अरब अमीरात के नये राष्ट्रपति।

■ 15 मई

- इस्लामिक स्टेट के आतंकवादियों पेशावर में 2 सिख व्यापारियों की हत्या की गई।

- असम: बाढ़ में फंसे 119 लोगों का इंडियन एयरफोर्स ने रेस्क्यू किया।

- भारतीय बैडमिंटन टीम ने इतिहास रचा पहली बार थॉमस कप जीता।

■ 16 मई

- असम: बाढ़ और भूस्खलन से 20 जिलों के 1.97 लाख लोग प्रभावित हुये।

- कर्नाटक के पूर्व मंत्री ईश्वरप्पा ने कहा कि मुगलों ने 36 हजार मंदिरों को तोड़ा है हम उन्हें पुनर्जीवित करेंगे।

- फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रो ने घोषण की कि फ्रांस की प्रधानमंत्री एलिजाबेथ बोर्न होगी।

■ 17 मई

- यूक्रेन में आज 76 ब्लास्ट दर्ज किये

गये चेर्निहाइव में रॉकेट हमले में 8 की मौत हुई।

- जम्मू कश्मीर के आईजीपी बड़गाम पहुँचे कश्मीरी पंडितों को सुरक्षा का भरोसा दिया।

- सीबीआई ने कांग्रेस नेता कार्ति चिदंबरम के दफ्तर और आवास समेत कई जगहों पर छापे मारे।

■ 18 मई

- राजस्थान: कांग्रेस एमएलए और युको अध्यक्ष गणेश घोघरा का इस्तीफा वे गहलोत सरकार के कामकाज से नाराज थे।

- उत्तराखण्ड: आप के सीएम फेस रहे कर्नल अजय कोठियाल ने पार्टी छोड़ी

- दिल्ली के उपराज्यपाल अनिल बैजल ने इस्तीफा दिया।

■ 19 मई

- महिला मुक्केबाज निकहत जरीन को पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह शुभकामनायें दी क्योंकि उसने वर्ल्ड बॉक्सिंग में गोल्ड मेडल जीता।

- अफगानिस्तान: चेहरा ढंककर न्यूज पढ़ेगी टीवी एंकर तालिबान का फरमान आया।

- निठारीकांड के मुख्य आरोपी सुरेन्द्र कोली को गाजियाबाद सीबीआई कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई।

■ 20 मई

- जम्मू कश्मीर के रामबन में एक निर्माण धीन सुरंग का हिस्सा गिरा 6-7

लोग लोग फंसे।

- सपा विधायक आजमखान 27 महीने बाद रिहा हुये।

- शीना बोरा हत्याकाण्ड की मुख्य आरोपी इन्द्राणी मुखर्जी जेल से रिहा हुई।

- पंजाब काँग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिद्धू पटियाला जेल पहुँचे उन्हें कैदी नम्बर 2041-383 दिया गया।

■ 21 मई

- दुमका झारखंड: बरमसिया रेलवे ट्रैक के पास 3 लोगों की ट्रेन से कटकर मौत हुई।

- असम बाढ़ में अब तक नौ की मौत लैंडस्लाइड से 5 लोगों की जान गई 7 लापता हैं।

- आस्ट्रेलिया: प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन चुनाव हारे लेबर पार्टी के एंथनी अल्बनीज होगें नये पीएम।

■ 22 मई

- क्वाड समिट में हिस्सा लेने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जापान रवाना हुये।

- इजराइल ने मंकी पॉक्स का पहला मामला सामने आया।

- उत्तरप्रदेश: सिद्धार्थ नगर में बारातियों से भरी अनियंत्रित बोलेरो ट्रक से भिड़ी 8 लोगों की मौत हो गई।

■ 23 मई

- दिल्ली एनसीआर में हुई तेज बारिश के चलते डेढ़ घंटे अंदर तापमान 11 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया।

- भाजपा नेता किरीट सौमैया की पत्नी

मेधा ने शिवसेना सांसद संजय राउत के खिलाफ 100 करोड़ रुपये मानहानि का मुकदमा दायर किया।

- खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के चैयरमेन विनयकुमार सक्सेना को दिल्ली का नया उपराज्यपाल बनाया गया।

■ 24 मई

- जम्मू कश्मीर के श्रीनगर में पहली बार गुरु लीलामृत कथा हो रही हैं।

- गर्मी की छुट्टियों का लुत्फ उठाने मनाली जा रहे सैकड़ों पर्यटक जाम में फंस गये।

- भ्रष्टाचार के मामले में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने अपने ही मंत्री को जेल भिजवा दिया और स्वास्थ्य मंत्री डॉ. विजय सिंगला को कैबिनेट से भी बर्खास्त कर दिया।

■ 25 मई

- वरिष्ठ कांग्रेस नेता कपिल सिब्बल ने कांग्रेस का साथ छोड़ दिया।

- अमरीका टेक्सास प्रांत में 18 साल के सिरफिरे लड़के ने एक प्राइमरी स्कूल में ताबड़तोड़ गोलियां बरसाकर 19 बच्चों और 2 शिक्षकों की जान ली।

■ 26 मई

- कश्मीर के अलगाववादी नेता यासीन मलिक को अब ताउम्र कैद में रहना होगा।

- मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राजधानी भोपाल में आगनवाड़ी के बच्चों

के लिये जनसहयोग से खिलौने जुटाने का अभियान शुरू किया।

- कोलंबो- अभूतपूर्व आर्थिक संकट का सामना कर रहे श्रीलंका ने पेट्रोल व डीजल के दामों में रिकार्ड वृद्धि की।

- हिंद प्रशांत क्षेत्र के ताकत के बलबूते अपना विस्तार करने में जुटे चीन को क्वाड संगठन ने सबसे बड़ा संदेश दिया।

■ 27 मई

- केन्द्रीय मंत्री राजनाथ सिंह आज भारतीय नौसेना के आईएनएस खंडेरी पनडुब्बी में सार्टी लेने पहुँचे।

- लद्दाख में सड़क हादसा 26 जवानों को ले जा रहा सेना का वाहन श्योक नदी में गिरा 7 की मौत।

- कश्मीरी टीवी एक्ट्रेस की हत्या करने वाले 2 आतंकी ढेर 24 घंटे में ही सुरक्षा बलों ने लिया बदला।

■ 28 मई

- ग्वालियर: केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो की टीम ने एक करोड़ रुपये कीमत का अवैध डोडा चुरा पकड़ा।

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा योग और आयुर्वेद को किसी मजहब से जोड़ना दुर्भाग्यपूर्ण है।

- जयपुर: गृहक्लेश और प्रताड़ना से तंग आकर एक ही घर में ब्याही तीन बहनों कालादेवी, ममता, मीणा और कमलेश मीणा ने दो मासूमों हर्षित और 20 दिन के

नवजात के साथ कुएं में कूदकर जान दे दी।

■ 29 मई

- केरल में मानसून आया यह मानसून समय से पहले आया है।

- भोपाल की प्राची यादव ने पैराकेनो वर्ल्ड में कांस पदक जीता।

- चीन को पीछे करके अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापार सहयोगी बना।

■ 30 मई

- सुप्रीम कोर्ट ने तलाक-ए-हसन से जुड़ी याचिका पर तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया।

- प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मनी लांड्रिंग केस में दिल्ली सरकार के मंत्री सत्येन्द्र जैन को गिरफ्तार कर लिया।

- जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले में सुरक्षा बलों के साथ रातभर चली मुठभेड़ में जैश-ए-मोहम्मद के दो आतंकी मारे गये।

■ 31 मई

- कुलगाम में सरकारी स्कूल के बाहर रजनी बाला को रोककर आतंकियों ने नाम पूछा फिर सिर पर गोली मार दी।

- नेशनल पैथर्स पार्टी के संस्थापक और पूर्व विधायक प्रो. भीम सिंह (81) का जम्मू में निधन हो गया।

- हनुमान के जन्म स्थान पर धर्म संसद रद्द संतों में बहस माइक से हमले की कोशिश।

इसे भी जानिये

भारत के महान शहीद

नाम	जन्म	विशेष बात	सजा	वीरगति
मास्टर अमीरचन्द्र	1869-8मई	लार्ड ऑडिन के वध करने का आरोप	फाँसी	1915
अवध बिहारी	1889-8मई	लाहौर बम काण्ड	फाँसी	8 मई 1915
अशफाकउल्ला खान	1900-18 दिस.	काकेरी डॉकगाड़ी डकेती के आरोप में बंधी	फाँसी	18 दिस. 1927
चन्द्रशेखर आजाद	1906-27 फर.	30,000 रूपये का इनाम घोषित किया		27 फरवरी 1931
ऊधम सिंह	28 दिस. 1899	जे.ए.के स्कॉड को मारा	फाँसी	31 जुलाई 1940
अनंत कन्हेरे	1891-19 अप्रैल	जैकसन की हत्या की	फाँसी	19 अप्रैल 1910
हेमू कलानी	1924-21 जन.	ब्रिटिश सैनिक गाड़ी को पलटने के लिये गिरफ्तार	फाँसी	21 जनवरी 1943
आसुतोष कुइला	1924-29 सित.	विद्युत वाहनी	वीरगति को प्राप्त	29 सितम्बर 1942
कुसाल कोंवर	1905	पटरी उलटाने के संदेह में	फाँसी	16 जून 1943
दिनेश गुप्ता	1911-7 जुलाई	जैनों के महानिरिक्षक सिमसन पर गोली चलने का आरोप	फाँसी	7 जुलाई 1931
निर्मल जीवन घोष		जिला मजिस्ट्रेट पर गोली चलाने पर	फाँसी	26 अक्टू. 1934
ब्रजकिशोर चक्रवर्ती		जिला मजिस्ट्रेट की हत्या का आरोप	फाँसी	26 अक्टू. 1934



दिशा बोध

ईर्ष्या-त्याग



1. ईर्ष्या के विचारों को अपने मन में न आने दो, क्योंकि ईर्ष्या से रहित होना धर्माचरण का एक अंग है।
2. सब प्रकार की ईर्ष्या से रहित स्वभाव के समान दूसरा और कोई बड़ा वरदान नहीं है।
3. जो मनुष्य धन या धर्म की परवाह नहीं करता, वह अपने पड़ोसी की समृद्धि पर डाह करता है।
4. समझदार लोग ईर्ष्या बुद्धि से दूसरों को हानि नहीं पहुँचाते, क्योंकि उसका जो खोटा परिणाम होता है, उसे वे जानते हैं।
5. ईर्ष्यालु के लिए ईर्ष्या ही बुरी बला है। उसके बैरी उसे चाहे क्षमा भी कर दें, तो भी वह उसका सर्वनाश ही करेगी।
6. जो मनुष्य दूसरों को दान देते हुए नहीं देख सकता, उसका कुटुम्ब रोटी और कपड़ों तक के लिए मारा-मारा फिरेगा और नष्ट हो जायेगा।
7. ईर्ष्या करने वाले के पास लक्ष्मी नहीं रह सकती, वह उसको अपनी बड़ी बहन दरिद्रता की देखरेख में छोड़कर चली जाएगी।
8. दुष्टा ईर्ष्या दरिद्रतारूपी दानवी को बुलाती है और मनुष्य को नरक के द्वार तक ले जाती है।
9. ईर्ष्या करने वालों की समृद्धि और उदारचित्त पुरुषों की कंगाली, ये दोनों ही एक समान आश्चर्यजनक है।
10. न तो ईर्ष्या से कभी कोई फूला-फला है और न उदार हृदय कभी वैभव से हीन ही रहा है।

बारह भावना का चिंतन क्यों ?

✽ एलक सिद्धांतसागर जी महाराज ✽

प्रत्येक दार्शनिक चिंतक ने सृष्टि के सत्य को देखकर अपने जीवन संचार का सिद्धांत निर्धारित किया है तथा अपने जीवन विभाग और पद्धति का सृष्टि का सत्य जानने के बाद सुनिश्चित किया है प्रकृति के अनुकूल चलकर ही सुख और शांति प्राप्त होना हर ज्ञानी का अंतिम निर्णय रहा है और प्रकृति के प्रतिकूल चलकर सदैव कष्ट और आपदा का कारण रहा है यह तथ्य एवं सत्य प्रत्येक शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक विद्वान को स्वीकार्य है किन्तु विडम्बना यह रही है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति के अनुकूल नहीं चल पाया है कोई न कोई प्रकृति से पंगा ले ही लेता है और परिणाम कष्ट आपदा अशांति का पात्र बन जाता है ऐसे कष्ट युक्त व्यक्ति को देखकर जो ज्ञानी साधक चिंता करते हैं अथवा आत्म निष्ठ व्यक्ति संसार शरीर और कष्ट मुक्ति के उपायों पर जब भी विचार किया जाता है तभी बारह भावना के चिंतन का उद्गम होता है इसे ही तत्त्व चिंतन का परिणाम कहा जाता है।

संसार शरीर और कष्ट मुक्ति के उपाय इन तीन बिन्दुओं पर विचार करने पर बारह बिन्दु उत्पन्न हो जाते हैं संसार के सभी पदार्थ द्रव्य रूप से नित्य होते हैं एवं पर्याय रूप से या अवस्था की दृष्टि से पदार्थ अनित्य भी होते हैं पदार्थ की अध्रुवता देखकर प्रज्ञावान पुरुष वैराग्य पथ पर चल पड़ते हैं और सांसारिक प्रयोजनीयता सार शून्य नजर आने लगती है कौटुम्बिक संबंध और लक्ष्मी की चंचलता को देखकर धर्म कार्य में लग जाना या सर्व-जनहित के लिये सेवा परोपकार में धन लक्ष्मी का दान करना ही सार्थक नजर आने लगता है। यह अनित्य भावना की सोच का केन्द्र है। तदुपरांत यह व्यक्ति सोचता है कि संसार में कोई मृत्यु से बचाने के लिये शरण नहीं है सेना, देवी, माता पिता एवं परिवार को शरण मानना मोह के सिवाय और कुछ नहीं है इसी भूल को सुधारकर सम्यग्दर्शन अर्थात् सच्ची श्रद्धा सम्यग्ज्ञान और सच्चे आचरण से जुड़कर जीवन को सार्थक बनाने का निर्णय करता है एवं एक और चिंतन करता है संसार में जीव चारों गतियों में भ्रमण करता है।

पंचपरिवर्तन करता है सभी लोगों से अपने रिश्ते नाते बनाता है परन्तु सुख शांति प्राप्त नहीं करता है यह चिंतन संसार भावना में केन्द्रित होता है। जीव अकेला है साथी परिवार, धन लक्ष्मी कोई भी साथ नहीं निभाता है सुख-दुख जीवन मरण सभी कुछ अकेले को ही भोगना पड़ता है यही एकत्व भावना का विषय बनता है जीव और शरीर दोनों अलग-अलग हैं। जहाँ शरीर अपना नहीं होता है वहाँ सारे परिजन अपने कैसे हो सकते हैं ऐसा चिंतन अन्यत्व भावना को स्पष्ट करता है। शरीर जब पर रूप सिद्ध हो जाता है तो शरीर के आकर्षण को समाप्त करने के लिये शरीर की अपवित्रता निःसारतः को समझना और समझाना आवश्यक हो जाता है यही अशुचित भावना का चिंतन है।

उपर्युक्त छह बिन्दुओं पर चिंतन करने के उपरांत शरीर मन और वाणी शुभ और अशुभ व्यापार संसार के बंधनों की भूमिका निर्मित करते हैं त्रय लोगों की चपलता कर्म आश्रव का द्वार

खोलती है इससे बंधने वाले कर्म संसार भ्रमण की धुरी बन जाते हैं दुख से हर आदमी बचना चाहता है और दुख का कारण एक मात्र कर्म आश्रव ही है। ऐसे दुख को समाप्त करने के लिये ऐसे कर्म आश्रव का निरोध करने पर ही दुख का निरोध होता है। और कर्म आश्रव के निरोध का नाम ही संवर होता है आश्रव भावना के चिंतन के उपरांत संवर भावना का प्रारंभ होता है और यह संवर भावना व्रत समिति गुप्ति धर्म अनुप्रेक्षा और परीषह जय स्वरूप है संवर भावना का विस्तार से चिंतन करने पर संवर की रचना स्पष्ट हो जाती है तदुपरांत कर्म को आंशिक रूप से नष्ट करने का प्रयास तप के माध्यम से प्रारंभ होता है कर्म को आंशिक रूप से नष्ट करने का नाम निर्जरा कहा गया है यह निर्जरा दो प्रकार से होती है 1. सविपाक निर्जरा 2. अविपाक निर्जरा।

सविपाक निर्जरा गजस्नान के समान होती है इस निर्जरा से कोई आत्मा का कल्याण नहीं होता है किन्तु तप के माध्यम से होने वाली अविपाक निर्जरा दुख मुक्ति का सर्वसिद्ध साधन है ऐसी निर्जरा करने वाले जीवों की क्रमबद्धता होती है और सम्यग्दृष्टि से लेकर अंतिम जिन परमात्मा अयोग केवली गुणस्थान तक असंख्यात गुणी होती है। धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान के माध्यम से निर्जरा में विशेष वृद्धि होती है।

लोक चिंतन करना या संपूर्ण सृष्टि का चिंतन करना लोक भावना के अंतर्गत समाहित होता है लोकभावना में सृष्टि की उत्पत्ति और विनाश की कल्पना का निरासन करते हुये सृष्टि की अनादि निधनता को स्वीकार किया जाता है चौदह राजू ऊँचे पुरुषाकार लोक स्वरूप का निश्चय करने के उपरांत यह तय कर लेते हैं कि यह लोक रचना का आधार जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य होते हैं जहाँ ये छहों द्रव्य पाये जाते हैं या देखे जाते हैं उसे ही सर्वज्ञ देव ने लोक कहा है। इस लोक में यह जीव अनादि काल से भ्रमण कर रहा है इस भ्रमण का कारण अज्ञान मिथ्याज्ञान अथवा समता परिणाम का अभाव होना ही ज्ञानियों ने स्वीकार किया है लोक भावना के चिंतन में वस्तु निष्ठता का केन्द्र अवश्य बनाता है।

यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना इस संसार की सबसे दुर्लभ वस्तु है क्योंकि यह जीव बड़ी दुर्लभता के साथ निगोद से त्रस पर्याय प्राप्त करता है और बहुत सौभाग्य से मनुष्य तन प्राप्त करता है और मनुष्य तन प्राप्त करने के बाद उत्तम देश, उत्तम कुल, उत्तम संगति भी प्राप्त हो जाती है तथा महान पुण्य के उदय से यह प्राणी मुनिव्रत भी धारण कर लेता है किन्तु एक यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना दुर्लभ होता है।

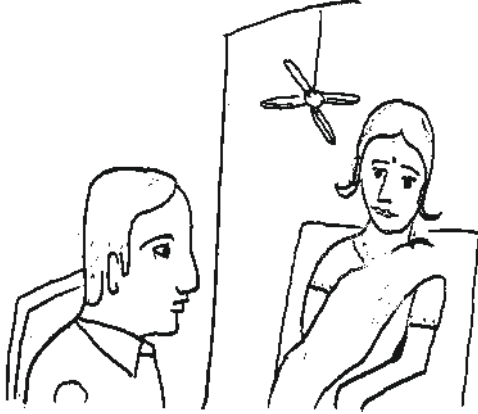
धर्म जीवन का साथी होता है यही धर्म व्यक्ति को संपूर्ण सुख देने वाला होता है धर्म की रचना क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप त्याग, आर्किंचन, ब्रह्मचर्य गुणों पर आधारित होती है यह धर्म मुक्ति और कल्याणक के पथ का साधन होता है इस तरह इन बारह भावनाओं का चिंतन करने से व्यक्ति प्रकृति के अनुकूल आचरण करने लगता है तथा शांति सुख और आनंद को प्राप्त करने के लिये इन बारह बिन्दुओं के चिंतन को आधार बनाता है।

कहानी

जब जब आँख से निकले आँसू

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

गर्मियों के दिनों में रेल्वे प्लेटफार्म पर एक महिला अंग्रेजी फारवर्ड बोलकर भीख मांग रही थी उसे देखकर कोई यह नहीं सोच पा रहा था कि ये भिखारन होगी सारे लोग उसे कुछ



मैंने इसे पागल समझ करके पत्थर मारा रूस्तम सिंह ने फिर कहा किसी को पत्थर मारना उचित है यदि कोई तुम्हें पत्थर मारे तो तुम्हें कैसे लगेगा लड़के ने कहा कि मैं कोई पागल थोड़ी हूँ पत्थर तो

भी देने से कतरा रहे थे पटना की बिहारी भाषा भी वह बोल लेती थी सचमुच में उसके चारों तरफ भीड़ तो लग जाती थी परन्तु यह भीड़ सिर्फ उन लोगों की होती थी जो तमाशा देखना चाहते थे बीच-बीच में वह यह भी कहती जाती थी कि यहाँ तमाशा नहीं हो रहा आप लोग अपना काम देखिये इसी बीच में एक बच्चे ने उसके लिये पत्थर फेंककर मार दिया भिखारन ने लपक करके उस लड़के को पकड़ लिया और वह उसे जी आर पी थाने ले गई थाना प्रभारी रूस्तम सिंह ने उस लड़के और औरत को देखकर पूछा आपकी क्या समस्या है मीनू ने कहा इस लड़के ने मुझे पत्थर मारा है आप पूछिये इससे इसने पत्थर क्यों मारा है। रूस्तम सिंह ने लड़के की ओर अपना चेहरा करके चश्मा संभालते हुये कहा- क्यों रे लड़के तूने इस औरत को पत्थर क्यों मारा।

पागल को मारा जाता है मैं कोई पागल थोड़ी हूँ। मीनू ने कहा- क्यों रे छोरे मैं तुझे पागल दिख रही हूँ कहां से पागल हूँ और उस लड़के की तरफ लपकते हुये कहा- मेरे एक थप्पड़ में तेरी बत्ती सी झड़ जायेगी।

रूस्तम सिंह ने कहा- देखो बहन जी थाने में किसी से झगड़ा करना अपराध है उल्टा मामला आप पर बन जायेगा मैं ये जानता हूँ आप पागल नहीं हो परन्तु आप 3 दिन से रेल्वे स्टेशन पर लावारिस की तरह घूम रही है मैं खुद आप को थाने में बुला करके पूछना चाह रहा था कि आखिर आपकी क्या समस्या है।

मीनू ने कहा- मैं बड़ोदरा की रहने वाली हूँ मेरा नाम मीनू पटेल है मेरी शादी वैभव भाई पटेल से हुई मैंने गुजराती और अंग्रेजी से एम.ए. किया है और मैं पी.एच.डी करना चाहती थी मेरा परिवार बहुत पैसे वाला है

किन्तु मेरा पति बहुत छोटे सोच के हैं और मेरी उनसे छोटी-छोटी बात पर झड़प होती रहती थी पति बात-बात पर मेरी कमियां निकाला करते थे मेरे मायके वाले हमेशा बुराई किया करते थे वे हमेशा पार्टियों में मौज मस्ती करना पसन्द करते थे किन्तु मुझे मौज-मस्ती पसन्द नहीं थी मैं चाहती थी कि एक अच्छा सद्गृहस्थ का जीवन जिया जाये तथा धर्म से जुड़कर सदाचरण किया जाये तथा गरीबों की मदद की जाये तथा घर पर आये हुये किसी भी साधु को भूखा न जाने दिया लेकिन उनके विचार हमसे बिल्कुल विपरीत थे वे चाहते थे और मानते थे कि दुनिया में कोई साधु नहीं है ढोंगी है खाते हैं पीते हैं ऐश करते हैं इनको कोई काम तो होता नहीं है सिर्फ समाज को लूटा करते हैं।

रूस्तम सिंह ने कहा- मैं भी आपके पति की बात से सहमत हूँ मैं भी देखता हूँ कितने ही बिना टिकिट साधु ट्रेन में सफर करते हैं जब कोई अधिकारी बिना टिकिट ट्रेन में उन्हें पकड़ता है तो उसे टिकिट न दिखाकरके वे अपना साधुपना दिखाते हैं बड़े-बड़े नेताओं के संपर्क की धमकी देते हैं और यहां तक कह देते हैं अगर तुम हमें ज्यादा परेशान करोगे तो हम तुम्हारी नौकरी खा जायेंगे और तुम हमसे बड़े भिखारी जाओगे हमें तो आदमी साधु समझकर कोई भीख भी दे देता है तुम्हें तो कोई भीख भी नहीं देगा और वे खट से अपने जेब से मोबाईल निकालते हैं और किसी भी नेता को फोन लगाकर अधिकारी के कान में मोबाईल लगाकर कहते हैं कि लो बात करो तभी कोई नेता अपना परिचय देते हुये कहता है कि आप कौन से साहब बोल रहे हैं हम लोग

अपना परिचय देते हैं तो वे कहते हैं इन्हें छोड़ दो और अपना काम करो यहां तक कि मैंने ऐसे साधुओं को भी देखा है जो सट्टा के नम्बर बताते हैं कई अनैतिक कार्य करते हैं इसीलिये मीनू बेन तुम मेरी बात मानो मानवता को अपनाओ मानवता के लिये कार्य करो कोई गरीबों के भले का काम करो इसी में भला है।

लाख करो तुम पूजन

तीरथ करो हजार

दीन दुखी को दुकराया

तो सब कुछ है बेकार

मीनू बेन आप अपने पति के साथ रहें और मानव कल्याण के लिये कार्य करते रहे तो यह भी सबसे बड़ा धर्म होगा आप अपने पति का नम्बर दे दें तो हम उनको यहाँ बुलवा लेते हैं और फेमिली कोर्ट के माध्यम से आपके परिवार का समझौता करवा देते हैं आप उनके साथ रहकर अपनी अच्छी जिंदगी काट सकते हैं।

मीनू ने कहा- मैं अपने पति को भूल चुकी हूँ आप उनकी याद कराकर मेरे दिल के घावों को हरा न करें मेरे पति ने जो मेरा अपमान किया है पल-पल पर मुझे दुकराया है उसे भूल पाना संभव नहीं है मैं भूखी रह सकती हूँ सड़क पर भीख मांग सकती हूँ परन्तु पति के साथ नहीं रह सकती हूँ मुझे मालूम है कि उसके पास बहुत वैभव है और उसका नाम भी वैभव है उसके पास बंगला है बहुत पैसा है और पढ़ा लिखा भी कम है उसके पास शिष्टाचार का बहुत अभाव है वह किसी की इज्जत करना नहीं जानता है वह नहीं जानता है दूसरों का दर्द क्या होता है दुनिया का सबसे शिष्टाचार शून्य

इंसान है उसने चाँदी की दीवार न तोड़ी और मेरा प्यार भरा दिल तोड़ दिया मुझे उसने अनजाना इंसान समझा मैंने अपने परिवार की बात न मानकर वैभव को जीवन साथी चुना था शादी के पहले तक वह कहता था मीनू तुम कहो तो मैं तेरे लिये आसमान से तारे तोड़कर भी तेरे पास ला सकता हूँ स्वर्ग का द्वार छोड़कर तेरे लिये कहीं भी जा सकता हूँ। परन्तु शादी के बाद उनकी भाषा और परिभाषा बदल गई। रूस्तमसिंह ने कहा कि- प्रेम विवाह में प्रायः ऐसा ही होता है प्रेम विवाह बहुत कम सफल होते हैं क्योंकि उनमें प्रेम कम वासना अधिक होती है स्वाद पूर्ण इच्छायेँ भावुकता का रूप ग्रहण करती हैं।

मीनू ने कहा- सर ऐसा तो नहीं है मैंने तो कई प्रेम विवाह को सफल होते देखा है ये तो आदमी के चरित्र चिंतन पर निर्भर करता है।

रूस्तम सिंह ने बात बदलते हुये कहा कि अब आप काम की बात पर आइये ये बताइये अब आप की क्या व्यवस्था की जाये आपकेपति के पास आपको भेजा जाये या नारी निकेतन मीनू ने रूस्तम सिंह से साफ शब्दों में कह दिया मैं ससुराल और पति के पास तो नहीं जा सकती हूँ आप चाहें तो मुझे नारी निकेतन भेज सकते हैं।

रूस्तम सिंह ने कहा ठीक है आपको मैं नारी निकेतन भेज देता हूँ। मीनू ने हाँ कहकर स्वीकृति दी।

मीनू को रूस्तम सिंह ने दूसरे दिन सक्षमन्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत किया न्यायाधीश ने सारी पूछताछ करने के बाद मीनू को नारी निकेतन में विधिवत पहुँचा दिया मीनू

ने नारी निकेतन में पहुँचने के बाद संचालिका इन्द्रा दास से अच्छी पहचान बना ली। मीनू की प्रतिभा और व्यवहार से इन्द्रादास बहुत प्रभावित हुआ। मीनू को इन्द्रादास ने सही उपचार देकर सामान्य व्यवहार की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया अब मीनू अपने समग्र कार्यकलाप में झगड़ालु न होकर समझदार हो गयी तथा उसने हथकरघा के क्षेत्र में मधुरत हासिल कर ली। उसकी इस कला से इन्द्रादास इतनी प्रभावित हुई कि उसने अपने कोरगुप की बैठक में विषय रख दिया कोर गुप के सदस्यों में चर्चा का विषय बना और उन्होंने निर्णय लिया कि मीनू के माध्यम से निर्धन व विकलांग महिला समूह के लिये प्रशिक्षण कार्य प्रारंभ किया जाये और महिलाओं को स्वावलंबी रोजगार प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जाये।

बहुत दिनों की लगन मेहनत और उत्साह के बाद मीनू ने मुकाम पाया और पांच हजार महिलाओं का एक समूह बना। हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और गुजरात प्रदेश में भी मीनू ने अपनी पहचान बनाई देखते ही देखते करोड़ों का टर्न ओवर होने लगा दुबई, सिंगापुर, मलेशिया जैसे देशों में स्वावलंबी हथकरघा की तूती बोलने लगी महिलाओं ने मीनू को देवी का स्वरूप मानना शुरू कर दिया मीनू ने कई विधवा परिव्यक्ता और अबला महिलाओं को सहारा देकर भूखे हाथों में रोटी दी और निर्धन हाथों में बैंक खाते दे दिये जिन महिलाओं के बच्चे अभाव की जिन्दगी जी रहे थे और जो महिलायें प्रताड़ना का शिकार हो रही थी उनको मीनू ने सहारा देकर परिवार की प्रताड़ना से बाहर निकाला नारी निकेतन की

चार दीवार से बाहर निकलकर मीनू ने स्वाधीनता सशक्तिकरण का परचम लहराया जब मीनू अपनी पूरी उन्नति करती चली जा रही थी और मीनू के पति को जब मीनू की उन्नति और गौरवपूर्ण स्थिति का पता लगा तो वह मीनू के पास पहुँच गया। इसके पूर्व वैभव ने अपनी शादी का विज्ञापन कई पत्रिकाओं में निकलवाया और सामाजिक परिचय सम्मेलनों में भी मंच पर अपनी प्रस्तुति दी सुंदर स्मार्ट दिखने वाले वैभव के आकर्षक व्यक्तित्व को कई मंचों पर प्रस्तुत किया परन्तु बिंदबना यह रही कि मीनू के साथ हुये व्यवहार को सुनकर कोई भी लड़की ने वैभव के साथ विवाह करने की सहमति नहीं दी और कई वर्षों के प्रयास के बाद भी वैभव द्वितीय विवाह में सफल नहीं हो पाया कई बरस गुजरने के बाद उसके मित्रों ने एक ही सलाह दी कि वैभव अब तुम मीनू को ही सहमत करो जिसने कई विदेश यात्रायें कर ली हैं और फैशन के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया है जिसके चरित्र और चिंतन की प्रशंसा हर वर्ग कर रहा है वैभव को भी सबकी सलाह उचित लगी।

14 जनवरी के प्रभात में वैभव ने मीनू के कार्यालय में दस्तक दे दी। मीनू अपने कार्य में व्यस्त थी कि उसी समय मीनू का अधिनस्थ कर्मचारी एक स्लिप लेकर आया और कहने लगा मैडम एक सज्जन बाहर खड़े हैं वो आपसे मुलाकात करना चाहते हैं मीनू ने स्लिप में नाम पढ़ा वैभव पटेल बड़ोदरा यह नाम पढ़ते ही वह सिर पकड़कर बैठ गयी कुछ देर तक कुछ नहीं बोली सोचती रही आखिर क्या किया जाये।

मीनू ने अपने अरदली से कहा जो महानुभव आये हैं उनके नहाने धोने की व्यवस्था करो और वह अपनी कुर्सी से उठ गयी और रसोई में चली गई थोड़ी ही देर में मीनू विविध व्यंजनों की तस्तरी लेकर वैभव के सामने उपस्थित हो गई वैभव ने तस्तरी देखकर कहा मीनू मैं भोजन और नाश्ता करने नहीं आया हूँ मैं तुमसे कुछ बात करने आया हूँ मीनू ने कहा बिना खाये पिये बात करना भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है इसलिये मेरा आग्रह है कि पहले आप बैठकर नाश्ता करें फिर हम चर्चा जरूर करेंगे।

वैभव ने कहा -मुझे आज खाने पीने में आनंद नहीं बल्कि अपनी गलती स्वीकारने में आयेगा सचमुच मीनू मैंने बहुत बड़ी गलती की है जो मैं तुम्हें समझ नहीं पाया।

मीनू ने कहा- वैभव भाई तुमने जो मेरे साथ किया बहुत अच्छा किया है अन्यथा मैं सिर्फ भोग और बिलासी बनकर रह जाती जिस तरह से राम को बनवास मिलने से उनका जीवन निखरा था उसी तरह तुम्हारे छोड़ने से मेरा जीवन भी निखरा है मीनू की बात सुनकर वैभव घुटनों से खड़ा हो गया और उसकी आँखों से गंगा जमुना बह निकली वैभव की भावुक स्थिति देखकर मीनू भी भावुक हो उठी दोनों को रोते हुये देखकर नारी निकेतन की संचालिका इन्द्रादास भी वहां आ गई और उसने कहा- जब जब आँख से निकले पानी, मन निर्मल हो जाता है, इसके बाद मीनू और वैभव साथ रहने के लिये तैयार हो गये।

वायु विकार, अम्ल गैस एवं एसीडिटी

✱ डॉ. श्रीमति आशा जैन, इंदौर ✱

वायु विकार गैस अम्ल पित्त एसीडिटी आजकल एक आम बीमारी है। करीब 70 प्रतिशत व्यक्ति इससे पीड़ित हैं। असंतुलित आहार के कारण पाचन संस्थान का सही ढंग से कार्य न करना इसका खास कारण है। हमारा पाचन संस्थान किस तरह कार्य करता है एवं हम जो कुछ भी खाते हैं उसका पाचन संस्थान पर क्या प्रभाव पड़ता है, संतुलित आहार क्या है इसके बारे में प्रायः सभी जानते हैं। हम इस समय यहाँ पर विचार कर रहे हैं कि इसका पाचन पर क्या असर पड़ता है। यह दो तरह से विकृति पैदा करता है।

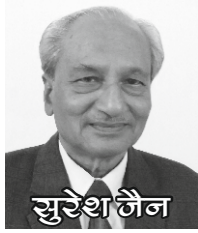
1. अतिसार- जो खाया है इसका पाचन न होकर दस्त के द्वारा वैसा ही निकल जाना। यदि इस समय उचित ध्यान नहीं दिया गया तो यह ग्रहणी व संग्रहणी का रूप ले लेता है।

2. कब्ज- हम जो भी खाते हैं उसके पाचन के बाद दो भाग हो जाते हैं एक जिससे रक्त बनकर सम्पूर्ण शरीर का पोषण होता है दूसरा जिसे हमारी आंतें समय समय पर बाहर फेंकती हैं। परंतु जब मल समय पर बाहर नहीं निकलता तो वह अंदर आंतों में पड़ा सड़ने लगता है। इस सड़न से बदबूदार गैस बनती है। यह गैस बहुत जहरीली होती है। गैस का स्वभाव है ऊपर उठना एवं फैलना यह गैस सम्पूर्ण शरीर में फैलकर विभिन्न बीमारियाँ पैदा करती हैं। इससे खट्टी एवं बदबूदार डकारें आती हैं एवं एसीडिटी हो जाने के कारण इससे जलन भी होती है। यह गैस जिस अंग से आ जाती है वहाँ पर उसके स्वाभाविक कार्य में बाधा डालती है। इससे मानव शरीर बीमारियों का घन बन जाता है। हमारी आंतों में चूने की एक विचित्र शक्ति है। पाचन के बाद जो बचा हुआ आहार का भाग इन आंतों में आता है वह तरल रूप में रहता है। आंते इसमें से सार भाग को सोख लेती हैं एवं मल को कुछ ढीला रहने देती हैं जिससे वह आसानी से निकल सके। परंतु यही मल जब अधिक समय तक आंतों में पड़ा सड़ता है तो आंते अपने स्वभाव के अनुसार इसके रस चूसती रहती हैं। सड़े हुये मल का जहर भी इसके साथ चला जाता है, एवं खून में मिल जाता है। इस तरह यह विष रक्त को भी दूषित कर देता है। यह रक्त संबंधी अनेक रोगों को उत्पन्न कर शरीर के सभी अंगों को शिथिल एवं रोगी बनाता है। इससे बेचैनी घबराहट होने लगती है। पेट के उपरी भाग एवं छाती में पीड़ा होने लगती है।

बचने के उपाय- कुदरत ने आंतों को बल दिया है कि मल को आसानी से विसर्जित कर सके। किंतु यह कार्य वे तभी कर सकती हैं जब हम खाद्यान्नों से तात्पर्य फल, सब्जी अन्न और दूध से हैं। ऐसे फल एवं सब्जियाँ जिन्हें कच्चे रूप में खा सके उनका प्रयोग सलाद के रूप में करें। दूध यदि तुरंत का लगा मिल जाये तो उसका उपयोग बिना गर्म किये ही करें। अन्यथा

एक बार उबाल लें। ज्यादा ओटाने से पौष्टिक तत्व खत्म होते हैं।

3. आटा थोड़ा मोटा पीसा हुआ व चोकर समेत प्रयोग करें।
 4. रेशेदार व मौसमी फलों का प्रयोग अधिक करें।
 5. सब्जियों को थोड़ा उबालकर कम घी तेल और कम मसालों के साथ प्रयोग करें।
 6. आलू का प्रयोग उन्हीं व्यक्तियों को करना चाहिये जो मेहनत अधिक करते हैं। स्टार्च अधिक होने के कारण ये देर से पचते हैं। सामान्य व्यक्तियों को हरी सब्जी जैसे गिलकी तोरई पालक भिंडी लौकी गाजर मूली का प्रयोग करना चाहिये।
 7. मिर्च मसाले घर के पिसे ही उपयोग करें।
 8. पानी अधिक पीना चाहिये। गैस खाली जगह पर फैलती है। उस समय यदि 3-4 गिलास पानी पी लिया जाये तो तुरंत आराम मिलता है। यदि गैस के कारण सिर दर्द हो तो उस समय भी अधिक पानी पीने से पेशाब भी अधिक होती है। इससे शरीर के विषाक्त पदार्थ एवं उष्णता बाहर निकल जाती है। और मल भी ढीला हो जाता है।
 9. दूध, दही छाछ का उपयोग अधिक करें।
 10. चाय, काफी, बीड़ी सिगरेट, तम्बाखू एवं मद्यपान से बचें।
 11. नियमित व्यायाम करें। आंते मांसपेशियों से बनी होती है। व्यायाम से मांसपेशियां सशक्त होती हैं। अतः आंतों को शक्तिशाली बनाने के लिये नित्य धूमने जाना चाहिये और हल्का व्यायाम करना चाहिये।
 12. सप्ताह में एक या दो दिन अपनी शक्ति के अनुसार उपवास एकासना या फलाहार करें। इससे आंतों को आराम मिलता है। एक मशीन भी जब लगातार काम करते करते गर्म हो जाती है तो उसे ठंडा करना पड़ता है। इसी तरह मानव शरीर के प्रत्येक अंग को आराम की आवश्यकता है।
 13. पेट साफ रखने के लिये सप्ताह में एक बार हल्का जुलाब लें।
- उपरोक्त उपायों से एवं खान पान संतुलित कर इस भयंकर बीमारी से बचा जा सकता है। आयुर्वेद के अनुसार प्रायः सभी बीमारियों की जड़ हमारा खान पान एवं पाचन संस्थान है। यदि यह सही रहे तो हमारे शरीर में बीमारियों से बचने के लिये जीवनीय शक्ति स्वतः विद्यमान रहती है। इस शक्ति को बढ़ाकर बीमारियों से लड़ने की क्षमता यदि बढ़ जाये तो बीमारियां स्वतः ही दूर हो जाती हैं। दवा से रोग दब जाता है जड़ से नहीं जाता है। रोग दबाने का काम वैसा ही है। जैसे कि कुड़े को ढंक देना जो कि अंदर ही अंदर सड़कर अधिक गंदगी फैलाता है। अतः कभी कभी हल्का जुलाब लेकर गंदगी बाहर करें और दिन चर्या को नियमित रखें। उचित एवं योग्य चिकित्सक की सलाह लेकर ही दवा जलें। मन से विज्ञापन आदि देखकर दवा चूर्ण न ले।



क्रमांक- 18 वरिष्ठ नागरिक

अकेलेपन से बचें और सकारात्मक सोच रखें

बुजुर्गावस्था जिंदगी का अहम हिस्सा है। यह अवस्था पूरे जीवन की कमाई का निचोड़, व्यक्तिगत प्रतिभा और सामाजिक स्तर पर प्राप्त किये गये स्थान की निशानदेही है। पूरी जिन्दगी में आपने क्या किया, क्या कमाया और कौन सा स्थान प्राप्त किया, यह पड़ाव उस कमाई का अक्स है। जो लोग इस पड़ाव तक पहुँचते हैं, वे बड़े खुशनसीबी होते हैं। जो लोग खुद को अच्छी तरह स्थापित कर लेते हैं, उनके लिये यह अवस्था उस खुशनसीबी का फल खाने का मौका है। इस अवस्था में जो लोग पहुँचते हैं और जिनके अभी तक जोड़े कायम है वे और भी भगवान की मेहरबानी का पात्र बनते हैं। नहीं तो आमतौर पर देखा जाता है कि जीवनसाथी के चले जाने से दूसरा भी कुछ महीनों में भगवान को प्यारा हो जाता है। इसका कारण सिर्फ अकेलापन है। यह अकेलापन बुजुर्गावस्था में ज्यादा दुखदाई हो जाता है। आज के सामाजिक ढाँचे में बुजुर्गों के साथ नई पीढ़ी की सोच नहीं मिलती। अगर भगवान न करें, कोई अकेला रह जाये तो उसके साथ कोई वास्ता रखने के लिये तैयार नहीं होता। इस अकेलेपन से कैसे बचा जाये। मसला यह है कि इस पर विचार किया जाना चाहिये। मुझसे कोई हालचाल पूछता है तो मेरा जवाब होता है-

**क्या हाल पूछते हो हमारे कारोबार का, अंधों के शहर में आइने बेचता हूँ।
बिक गये तो वाह भला वरना रात को अंधेरे में अपने आप को देखता हूँ।**

मेरे हम उम्र दोस्तों अगर आप भी अकेलेपन का शिकार होने से बचना चाहते हैं, तो खुद को व्यस्त रखें। आप लोगों को लाखों जूनों से ऊपर मनुष्य जीवन मिला है। इस में अपने आप को स्थापित करो और वे काम करो, जो अब तक नहीं कर सके। यह सपनों को पूरा करने की उम्र है।

सकारात्मक सोच- बुढ़ापे में बहुत जरूरी है कि सकारात्मक सोच को अपनाया जाये। बुढ़ापा भी वैसा ही बनता है जैसे आप के विचार होते हैं। जीवन में आप जिस तरह सोचते हैं, जैसी आप की विचारधारा होती है, वैसा ही आपका आचरण होता है। अकेलेपन से बचने के लिये आप अपने दिमाग से पुराने, थके-हारे, धिसे-पिटे विचारों को बाहर

निकाल फेंके। अपने दिमाग में आस्था, प्रेम और भलाई के नये ताजे और रचनात्मक विचारों को जगह दें। अपना नजरिया बदलकर आप नये इंसान बन सकते हैं। अपनी इन कमियों को पहचान कर नकारात्मक नजरिया बदले ओर चीजों को सकारात्मक ढंग से लेना शुरू करें। इससे आप अपने जीवन में आश्चर्यजनक सुधार महसूस करेंगे ओर देखेंगे कि दिमाग में नये तरीके के विचार आने लगे हैं। कुछ ही दिनों में पुराने नकारात्मक के विचार नये अनुभव द्वारा बाहर खदेड़ दिये जायेंगे और नये विचारों का प्रवाह धीरे-धीरे परन्तु निश्चित तौर पर आप को नया आदमी बना देंगे। देखा जाये तो यह सकारात्मक विचारों की शक्ति ही है, जिससे आपके जीवन में सुखद बदलाव आ सकते हैं। सकारात्मक विचार आते ही आप का अकेलापन खत्म हो जायेगा।

महान चिंतन मार्कस ऑरेलियस ने एक बार कहा था- आदमी की जिंदगी उसके विचारों से ही बनती है।

कविता

करुणा की पहचान है वीरो

हमको अब मत तुम धमकाओ, हम है सच्चे हिन्दुस्तानी।
धर्म अहिंसा पालक हैं, पर वीर बहादुर बलिदानी।
हम दुश्मन के दांत करे खट्टे, जब युद्ध भूमि पर डट जायें।
जब जान हथेली रख निकले, मझाल कि पीछे हट जायें।
हम भारत माँ की संतानें, दुनियाँ में नहीं हमारी शानी।
हर बार मात खाकर के तुम, क्यों आँख तरेरा करते हो।
जब वीर सिपाही भारत के, देते जवाब तुम भगते हो।
हम रखें हौंसला हिम्मत के, तुम हंगेश तालीवानी।
अत्याचारों से मानवता, माँ धरती कलंकित होती है।
तुम पर थूँके दुनिया सारी, नहीं कहीं प्रशंसा होती है।
करुणा पहचान है वीरों की, क्यों करता रे तू नादानी।



हमारे गौरव

अमर शहीद चौधरी भैयालाल

भैयालाल का जन्म 1886 में मध्यप्रदेश के दमोह नगर में पिता श्री बिहारीलाल के घर हुआ। 1908 के बंग-भंग के समय से ही वे राजनीति में सक्रिय हो गये थे। देश को आजाद देखने की उनमें ललक थी। संगठन की अद्भुत क्षमता के धनी चौधरी जी 1920-21 में दमोह के कांग्रेस जनों में अग्रणी थे उन्होंने लोकमान्य बालगंगाधर राव तिलक को दमोह में आमंत्रित किया पर शासन की ओर से सभा पर पाबन्दी लगा दी गई। चौधरी जी इससे निराश होने वाले नहीं थे। उन्होंने 20 मील दूर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर की सुरम्य पहाड़ियों के मैदान में सभा कराई और अपनी संगठन क्षमता का परिचय दिया। शासन जनता पर इनके प्रभाव से परेशान थे।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय जब दमोह में रेकूटिंग ऑफिसर सैन्यदल में जनता की भर्ती करने आया और उसने म्युनिसिपल कार्यालय में अपना भाषण दिया तब चौधरी जी ने विरोध स्वरूप भाषण के लिये समय मांगा। जब समय नहीं दिया गया तो उन्होंने धन्यवाद देने के बहाने समय मांगा। अंत में सीमित समय देने के बहाने समय मांगा। अंत में सीमित समय देने पर चौधरी जी ने नौसेना में भर्ती होने का विरोध किया और अगले दिन तिलक मैदान में सभा का ऐलान कर दिया। दूसरे दिन की सभा में जनता को इस सेना में भर्ती न होने की चेतावनी दी गई नेताओं का तर्क था कि यह युद्ध हमारे देश के हित में नहीं है और न ही हमारे हित के लिये लग जा रहा है।

इस अपराध के कारण चौधरी जी पर राजद्रोह का मुकदमा चला। इस मुकदमे में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि सरकारी पक्ष से एक भी गवाह पूरे दमोह शहर और देहात में नहीं मिला परंतु चौधरी जी के पक्ष में 2 हजार लोगों ने गवाही देने को अपने नाम दिये। सरकारी दवाव पड़ने पर भी जब कोई व्यक्ति गवाह के रूप में नहीं मिला तो बहुत दिनों तक मुकदमा टालते हुये अंत में मुकदमा खारिज कर दिया।

इसी बीच प्रान्तीय सरकार द्वारा सागर जिले के रतौना ग्राम में बूचड़खाना खोले जाने का प्रस्ताव आया सागर के साथ दमोह जिले में भी इसका डटकर विरोध किया गया चौधरी जी इस विरोध में अग्रिम पंक्ति में थे। अंत में बूचड़खाने का कार्य बंद करा दिया गया।

शहीद गाथा पुस्तक में शहीद चौधरी भैयालाल के लेखक श्री कपूरचंद विद्यार्थी ने एक घटना का उल्लेख किया है जो कि चौधरी जी के दबंग व्यक्तित्व को प्रकट करती है। चौधरी जी ने असहयोग में भाग लिया और प्रत्येक दुकानदार से विदेशी कपड़ा बेचने का बहिष्कार कराया। एक धनी मानी, विदेशी कपड़ों का प्रधान व्यापारी को मना करने पर भी रातों-रात चोरी से कपड़ा बेचता और दिन को लम्बी चौड़ी बातें करता जब चौधरी जी को पला चला तो वे उसी दुकान लगातार बैठे रहे अंत में दुकानदार ने महाबली होते हुये भी क्षमा मांगी। आखिर चौधरी जी ने छठे दिन अनशन तोड़ा।

सन् 1908 में बंग-भंग के समय में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। सन् 1922 में आकस्मिक निधन हो गया।

विवाह पूर्व फिल्मांकन भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों पर कुठराघात

* विजय कुमार जैन, राघौगढ़ *

प्राचीन वैदिक संस्कृति में व्यक्ति के जीवन में सोलह पवित्र संस्कारों का उल्लेख है। इनमें एक प्रमुख वैवाहिक संस्कार है। युवक युवती के शुभ विवाह से पूर्व ग्रह नक्षत्र एवं जन्म कुण्डली के मिलान का नियम है। हमारी भारतीय परंपरा यह रही है जन्म कुण्डली के मिलान के बाद ही रिश्ते तय होते रहे हैं। पाणिग्रहण संस्कार या शुभ विवाह जिसके नाम से पहले शुभ शब्द लगा है इसमें अनेक विकृतियों अथवा कुप्रथाओं का समावेश हो गया है। जिनके कारण पवित्र भारतीय संस्कृति अथवा संस्कार कलंकित हो रहे हैं।

वर्तमान में आयोजित होने वाले वैवाहिक कार्यक्रमों का जो स्वरूप हम देख रहे हैं उससे लगता है पवित्र मांगलिक कार्यक्रम का रूप विकृत हो गया है। मांगलिक कार्यक्रमों में बढ़ रही फूहड़ता से अनेक विघ्न एवं अमंगल हो जाते हैं। वैवाहिक कार्यक्रमों में वैभव प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा में पैसे की बर्बादी तो होती ही है, जिसकी हैसियत वैभवशाली शादी में जेब से पैसा लुटाने की नहीं है वह भी अपने प्रतिद्वन्दी को नीचा दिखाने बाजार से उधार लेकर जोरशोर से शादी कर रहा है।

शुभ विवाह के आयोजन में जो वैभव प्रदर्शन एवं फूहड़ता होती है वह सर्वथा स्वागत योग्य नहीं है। अभी तक शुभ विवाह उपरांत नवयुगल हनीमून मनाने किसी पर्यटन स्थल या हिल स्टेशन पर जाकर रंगरेलियां मनाते थे। अब इसमें एक और कड़ी जुड़ गई है। नवयुगल जिनका शुभ विवाह निकट भविष्य में होना है वे शुभ विवाह से कुछ दिन पूर्व किसी पर्यटन स्थल या ज्यादा सम्पन्न है तो विदेश जाते हैं। वहाँ कुछ दिन आलीशान होटल में ठहरते हैं। उनके पल पल की गतिविधियों का फिल्मांकन या वीडियो शूटिंग किया जाता है। इस नई नवेली रस्म का नामकरण प्री वैडिंग शूट दिया गया है। नवयुगल जो विवाह पूर्व रंगरेलियां मनाने जाते हैं उनकी यात्रा लगभग 7 से 10 दिन की होती है। जिस दिन अपने निवास से प्रस्थान कार या हवाई जहाज से करते हैं उसी क्षण से वीडियो शूटिंग प्रारंभ हो जाती है। जिस होटल में नवयुगल एक ही स्वीट में ठहरते हैं वहाँ की भी शूटिंग की जाती है। शुभ विवाह के दिन आशीर्वाद समारोह में वैवाहिक स्थल पर बड़ी-बड़ी टी.वी स्क्रीन लगाकर उक्त विवाह पूर्व फिल्मांकन या प्री वैडिंग शूट को आगन्तुक अतिथियों को प्रमुखता से दिखाया जाता है। इस कार्य को देश को धनाड्य उद्योगपति सम्पन्न वर्ग द्वारा जोर शोर से प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

शुभ विवाह जैसे मांगलिक कार्य को भूलकर आज की आधुनिक एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित युवा पीढ़ी लिव एवं रिलेशनशिप, प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह कर रही है। इन सब कार्यों से समाज का नैतिक पतन हो रहा है। जिन परिवारों में शुभ विवाह हो रहें उनमें युवक युवती विवाह पूर्व फिल्मांकन या प्री वैडिंग शूट पर परिवार जनों की सहमति से जा रहे हैं। प्री वैडिंग शूट में नवयुवक के प्रेमालाप, चुंबन, बैडरूम के अश्लील चित्रों का आशीर्वाद समारोह में टीवी की बड़ी स्क्रीन पर प्रदर्शित कर हम समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं।

क्या विवाह पूर्व नवदम्पति को होटल में ठहरकर प्रेमालाप अथवा आलींगन करना भारतीय संस्कृति के अनुरूप उचित है ?

दिगम्बर जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभाव शिष्य मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज का कहना है युवा पीढ़ी सहशिक्षा एवं परिवार द्वारा उन्हें स्वच्छंदता देने से संस्कार विहीन और पथभ्रष्ट हो रही हैं। आपका कहना है युवा पीढ़ी को संस्कार विहीन बनाने के लिये अभिभावक सबसे ज्यादा दोषी है अभिभावक अपने लड़के या लड़की को उच्च शिक्षा लेने एवं नौकरी करने उन्हें स्वच्छंद छोड़ देते हैं। परिवार का नियंत्रण नहीं होने के कारण युवा पीढ़ी निरंतर पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित होकर स्वयं समाज एवं देश का नैतिक पतन कर रही हैं। हम मुख्य रूप से विवाह रूप से विवाह पूर्व फिल्मांकन अथवा प्री वैडिंग शूट की चर्चा कर रहे हैं। अभी चल रही कुप्रथाओं से यह सबसे घृणित एवं समाज को कलंकित करने वाली कुप्रथा अपने पैर पसार रही है। इस प्रथा का जितना विरोध किया जाये उतना अच्छा होगा। मध्यप्रदेश में माहेश्वरी समाज ने प्री वैडिंग शूट पर प्रतिबंध लगाया है। माहेश्वरी समाज का यह निर्णय स्वागत योग्य है। देश में संस्कृति की रक्षा एवं संस्कारों का हनन न हो इसलिये आवश्यक है इसको सभी समाजों को प्राथमिकता से रोकना अति आवश्यक है। कोरोना महामारी के वैश्विक प्रकोप के चलते विवाह पूर्व फिल्मांकन पर विराम लग गया था। अब पुनः फिल्मांकन के लिये होटल एवं रिसोर्ट बुक होने लगे हैं।

विवाह पूर्व इस कार्य को किसी भी स्थिति में उचित नहीं कहा जा सकता। इस कुप्रथा को बंद किया ही जाना चाहिये।

कविता

बचपन



एक पल पहले क्या हुआ ?
हम अक्सर ये भूल जाते हैं....
लेकिन बचपन के किस्से
मुझे हमेशा याद आते हैं,
हर रोज सूरज की किरण

नया सबेरा लाती थी,
सबकी हँसी ठिठोली के बीच
मन फूल की तरह खिल जाता था
रात में नये-नये सपने आते थे
और सुबह उनको सच देखने की चास्त
न मन में छल था और न मल
सुख सुविधायें कम थी पर खुश थे हम
सही मौज तो बचपन की थी
ये जवानी में पला चलता है।
जीवन कितना बदल गया है
आज पता चलता है।

आलोचना दोष जानने का श्रेष्ठ माध्यम

* डॉ. आशा जैन, इंदौर *

वर्तमान में जीने के लिये अपने गुण और दोषों की पहचान करना बहुत आवश्यक होता है। आलोचना शब्द की उत्पत्ति आङ् उपसर्ग पूर्वक लुक् धातु में सानच् प्रत्यय के उपरांत लोचना शब्द का निर्माण होता है जिसका अर्थ होता है चारों तरफ से देखना अथवा गुण दोष की पहचान करना जब हम अपने भीतर झाँकने लगते हैं और अपने जीवन भर के कृत्यों पर चिंतन करते हैं तो अपनी बुराई हमें अपने आप पता लग जाती है इसलिये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार के अंतर्गत छः गाथाओं के माध्यम से परम आलोचना अधिकार सृजित किया है।

अधिकार के प्रारंभ में आलोचना के स्वरूप को सुनिश्चित करते हुये कहा है औदारिक, वैक्रियक, आहार, तैजस और कार्माण इन पाँच शरीर रूप नोकर्म तथा ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अंतराय इन आठों कर्मों से रहित तथा विभाव गुण पर्यायों से भिन्न जो आत्मा का ध्यान किया जाता है वही सच्ची आलोचना है। आलोचना के चार प्रकार पूज्य गुरुदेव ने सुनिश्चित किये हैं वे इस प्रकार हैं-

1. आलोचना 2. आलुंछन 3. अविकृति करण 4. भावशुद्धि

आलोचना- जो जीव परिणाम को समभाव में स्थापित करके निज आत्मा को देखता है उसे परम जिनेन्द्र देव ने आलोचना कहा है।

आलुंछन- कर्म रूपी वृक्ष को मूल रूप से नष्ट करने में जो समर्थ है ऐसा समभाव रूप स्वाधीन निज परिणाम को आलुंछन कहते हैं।

अविकृति करण-कर्म से आत्मा को विमल गुणों में माध्यस्थ भावना के रूप में जब ध्यान किया जाता है तो उसे अविकृति करण कहते हैं।

भावशुद्धि- मद अर्थात् काम परिणाम मान मायाचारी लोभ से रहित जो भाव होते हैं उसे लोकालोक दृष्टा सर्वज्ञ देव भाव शुद्धि कहते हैं।

अतः इन चारों से मिलकर परम आलोचना की रचना होती है।

ननद-भाभी पी.एच.डी उपाधि से अलंकृत

ब्र. डॉ. समता जैन मारौरा एवं डॉ. कल्पना जैन मारौरा ने श्रुत सिद्धांत शोधपीठ श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर के माध्यम से पूज्य ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी के निर्देशन में तीर्थंकर महावीर विश्व विद्यालय मुरादाबाद (उ.प्र.) से डॉ. शीतलचंद्र जी जयपुर, डॉ. फूलचंद जी प्रेमी बनारस एवं डॉ. विपिन कुमार जी मुरादाबाद के मार्गदर्शन में अपना शोधकार्य सम्पन्न किया है।

ब्र. डॉ. समता जैन मारौरा का जन्म 23.08.1980 को हुआ आपने पूज्य मुनिवर श्री क्षमासागर जी से शिवपुरी वर्षायोग 2001 में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये हैं। आप श्रीमती सुशीला सुरेश जैन मारौरा की सुपुत्री होकर समाधिस्थ आर्यिका श्री विशुद्धमति माताजी (सतना) के परिवार से ही आपकी गृहस्थावस्था की मौसी आर्यिका विनतमती माताजी हैं। आपने जैन वाङ्मय में परमाणु सिद्धांत विषय पर बहुत मेहनत से शोधकार्य सम्पन्न किया है।

डॉ. श्रीमती कल्पना सुबोध जैन मारौरा, श्री सुरेश जैन मारौरा इंदौर की पुत्रवधु होकर सुसंस्कारित गृहणी है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि रखती हैं। आप श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में महिला मंडल की सांस्कृतिक मंत्री हैं। आपनले समाधिस्थ आर्यिका विशुद्धमती माताजी साहित्यिक अवदान पर शोधकार्य सम्पन्न किया है।

डॉ. समता जैन के दोनो भाई श्री सुबोध जैन, श्री सुजश जैन, S/o सुरेश जैन मारौरा का जन्म 14.12.1981 को शिवपुरी में हुआ। आप दोनों भाई श्रुत सिद्धांत शोधपीठ इंदौर से ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी के निर्देशन में क्रमशः जैन पत्रकारिता एवं मुनि श्री क्षमासागर जी के साहित्य के अवदान पर शोधकार्य कर रहे हैं। जो अगले वर्ष तक सम्पन्न होगा।

दांतों की देखभाल बचपन से पचपन तक

* जिनेन्द्र कुमार जैन, इंदौर *

दांत शरीर का मुख्य भाग है जो भोजन को काटने चवाने के लिये होता व हमारे चेहरे की सुन्दरता व व्यक्तित्व को निखारने में होता है। दांतों की उपमा मोती से व अनेकों उपमा अलंकार में गुस्सा प्रकट करने, प्रसन्नता प्रकट करने में आदर करने में और साथ ही शब्दों के उच्चारण में भी महत्वपूर्ण योगदान है।

दांत चार अलग-अलग प्रकार के घनत्व व कठोरता के ऊतकों से बने होते हैं, जिनमें लुगदी, दन्त, तामचीनी और सीमेन्ट। लुगड़ी दांत का सबसे भीतरी भाग होता है और इसमें संयोजी ऊतक, तंत्रिका तंत्र और रक्त वाहिकाएँ होती हैं। जो दांतों को पोषण देती हैं। दांतों की संरचना में कैल्शियम व फास्फोरस 60% तक होता है, दांत का ऊपरी भाग इनामेल से बना होता है जो शरीर में सबसे कठोर होता है। दांत चार प्रकार के होते हैं। 1. कृन्तक- जो भोजन को कुतरने व काटने का कार्य करता है जो वयस्क अवस्था में 8 होते हैं। 2. केनाइन- ये भोजन को फाड़ने चीरने का पकड़ने में सहायता करते हैं जो चार होते हैं। 3. प्रीमोलर- भोजन को पीसने का कार्य करते हैं जो आठ होते हैं। 4. मोलर जो भोजन को दलना बारीक पीसने का कार्य करते हैं जो बारह होते हैं। वयस्क अवस्था में कुल 32 दांत, बाल्य अवस्था में 20, किशोर अवस्था में 28 दांत होते हैं। बच्चों में 6 माह में दूध के दांत, 6 वर्ष बाद दूध के दांत गिरना शुरू होकर 12 वर्ष तक गिरने के बाद 14 वर्ष में स्थाई दांत आते हैं। ध्यान दें एक बार स्थायी दांत आने के बाद टूटने पर नया दांत नहीं आते हैं। कुत्ता में 42 दांत, बिल्ली में 30 दांत, सुअर में 44 दांत व हाथी में 26 दांत होते हैं।

तंदुरुस्त दांत- दांतों की मजबूती मसूड़ों के स्वस्थ रहने पर निर्भर करती है इसके लिये संतुलित भोजन व दांतों की नियमित साफ सफाई पर अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिये। 1. भोजन में फाइबर, प्रोटीन, विटामिन सी, हरी पत्तीदार सब्जियाँ, दूध, दही, छाछ, सेव, संतरा, नींबू, नट्स और बीज अखरोट, बादाम, अलसी के बीज जिनमें ओमेगा 3 में फैटीह एसिड की अधिक मात्रा होने मसूड़ों की बीमारियों को रोकने में सहायता करते हैं। कैल्शियम, फास्फेट, प्रोटीन, केसिन मुंह में एसिड के स्तर को कम करने से दांतों के क्षय को रोकता है। 2. भोजन करने के आधा घंटे बाद ब्रश करना चाहिये क्योंकि खाने पीने से दांत की बाहरी परत अस्थाई रूप में नरम हो जाने से जमा एसिड इनामेल पर जाकर झनझनाहट की समस्या पैदा करता है। ब्रश करने से लार के साथ एसिड घुलकर निकल जाता है। अंतिम भोजन के बाद ब्रश करने से सड़न, मसूड़ों की बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। 3. बच्चों को मीठा, टॉफी, चॉकलेट, आदि खाने के बाद कुल्ला कराना जरूरी है इसी शर्त पर ये चीजें देना चाहिये। 4. बच्चा एक वर्ष से छोटा है तो दिन में दो बार कॉटन को गीला करके अंगुली से मसूड़ों को साफ रखना व दांत निकल आने पर हाथ से सफाई अवश्य करें। दो वर्ष से बच्चों को नरम रेशेदार ब्रश से बिना पेस्ट लगाये सफाई व बच्चे के दांत बड़े हो तो किड्स टूथ पेस्ट लगायें। 6 वर्ष के बाद पक्के दांत आने पर ही सामान्य पड़ने पर इलाज अवश्य करायें नहीं तो इनके दांत गिरने के बाद स्थाई दांत सही प्रकार से नहीं आते व शुरु से रोग ग्रस्त होने की समस्या होने लगती है। 5. ब्रश दो मिनट तक करना ज्यादा देर तक तेजी से रगड़ने से दांतों की इनामेल परत खराब होने, मसूड़ों को नुकसान होता है। सही तरीके से ब्रश करना, अच्छी गुणवत्ता का पेस्ट व मंजन का उपयोग करना

चाहिये यदि संभव हो सके तो नीम बबूल की दातून करना जो एंटीवैक्टेरियल होती है। ब्रश के साथ ही जीभ भी साफ करने से कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

सावधानियां- 1. कोल्ड्रूक ज्यादा पीने से दांतों की सड़न बढ़ती है और कमजोर होने की संभावना बढ़ती है, ज्यादा ठंडा व गर्म खाने व गर्म भोजन के बाद एक दम ठंडा पानी पीना या कुल्ला करने से दांत खराब होते हैं 75 % समस्या इसी से होती है।

2. ज्यादा चाय, काफी, पान तम्बाखू, गुटका, पान मसाला से निकलने वाले केमिकल मसूड़ों को कमजोर व दांतों को पीला करते हैं। अति चटपटे मसालेदार चिकने पदार्थों के सेवन करने से बचना चाहिये।

3. दांतों व मसूड़ों में होने वाले संक्रमण से डायबिटीज, हृदय रोग, मुँह का कैंसर जैसी गंभीर रोगों का खतरा बढ़ जाता है एवं नियमित सफाई न करने से सामान्य व्यक्तियों की तुलना में 10-15 वर्ष पहले ही दांतों के रोग होते हैं।

4. मल-मूत्र त्याग के समय मुँह को बंद रखने से शरीर में हानिकारक कीटाणुओं का मुँह मार्ग से प्रवेश से बचाव होता है।

5. बच्चों के अंगूठा चूसने से जबड़े, दांत, चेहरे की बनावट पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

6. दांत निकलवाने से आँखों की रोशनी पर प्रभाव पड़ता है।

7. गरम पानी के साथ नींबू मिलाकर पीने से दंत क्षय की संभावना 11 गुना बढ़ जाती है।

8. दांतों का प्राकृतिक रंग हल्का पीला होता है, अतः दांतों को सफेद करने के विज्ञापन के बहकावों में नहीं आये।

9. दांतों की मजबूती मसूड़ों को जिंदगी भर स्वस्थ रखने हेतु प्रभावी उपचार सप्ताह में दो तीन दिन बारीक सेंधा नमक 2 ग्राम में 4 गुना सरसों का तेल मिलाकर उंगली से मसूड़ों की हल्की-हल्की अच्छी तरह मालिश करने के बाद गुनगुने पानी से कुल्ला करने से दांतों का समस्त रोगों का प्रकोप खत्म हो जाता।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज सावधानियों से दांत रोग नियंत्रण हो जाता है किन्तु रोगों की तीव्रता होने पर एलोपैथी पद्धति अपनाना आवश्यक होता है किन्तु अधिक मंहगी होने से जन सामान्य की पहुँच से दूर हो रही है।

दांत रोग बाहरी कारणों के साथ ही मानसिक असंतुलन, स्नायविक पीड़ा, वातजन्य रोग, मौसम बदलाव, हर्ष, क्रोध आदि कारणों से भी होता है। बच्चों के दांतों का विकास मंद गति से होना, दांत समय के पहले निकलना, दांत देर से निकलना, दांत निकलने के समय अनेकों तकलीफ होना आदि में होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति जादू का काम करती है जिसमें लक्षणों के आधार पर कैलकेरियाफॉस, कैलकेरियाकार्ब, केमोमिला, अर्सेनिक एल्व, इग्नेशिया, मर्कसाल, क्रेजोटम, प्लांटिगो आदि औषधियों का उपयोग प्रभावी है।

बचपन में की गई गलतियों को ध्यान रखते हुये बच्चों को उचित दांत सुरक्षा को अपनाने में योगदान देना चाहिये। दांतों का जीवन का विकास, उत्तम स्वास्थ्य व सुन्दरता निखारने में बहुत बड़ा योगदान होता है। व्यक्ति कितना भी सुन्दर, बुद्धिजीवी हो किन्तु उसके दांतों की विकृति विपरीत प्रभाव डालती है। दांतों की सुरक्षा व स्वस्थ बनाये रखकर जीवन निरोगी, हमेशा जवान, तेज युक्त चेहरा बचपन से पचपन हंसते मुस्कुराते व्यतीत होगा।



हास्य तरंग

1. एक औरत ने अपनी सहेली को बताया कि बूढ़े आदमी से शादी करके अब पछता रही हूँ। सहेली ने आश्चर्य से पूछा। क्या उसके पास दौलत नहीं है, बैंक बैलेन्स नहीं है, क्या कार बंगला नौकर चाकर नहीं है? औरत बोली ऐसी कोई बात नहीं दुख तो इस बात का है कि जितनी उम्र उसने बताई थी वह उससे 20 वर्ष कम का निकला।

2. डॉक्टर- अपने दोस्त से बचपन में फिल्में देखकर मैं डाकू बनना चाहता था। दोस्त - डॉ. साहब आप बहुत भाग्यशाली हैं आपके इलाज का बिल देखकर यही लगता है कि दुनिया में किसके सपने सच होते हैं, मात्र तरीका अलग है।

3. सेठी जी ने अपनी रूठी पत्नी को मनाने के लिये मोबाईल लगाया तो दूसरी तरफ से औरत की आवाज आई मैं अहिल्या बोल रही हूँ। सेठी जी अरे बाप रे ! मैंने तो दुर्गावती को जबलपुर फोन लगाया और वह इन्दौर लग गया।

4. महिला अपने कलेक्टर पति की ओर इशारा करके कहती है ये जो पेट्रोल पम्प चलाता है, मेरे बचपन का दोस्त है। कलेक्टर देखो तुम कितनी भाग्यशाली हो कि तुम्हें कलेक्टर पति मिला। पत्नी यदि मेरी शादी तुम्हारी जगह मेरे दोस्त से होती तो वह कलेक्टर ही होता और तुम पेट्रोल पम्प चलाते।

5. भावित- स्कूल देर से पहुँचने पर शिक्षिका ने देर से आने का कारण पूछा। भावित- बहुत तेज वर्षा व हवा चल रही थी मैं एक कदम आगे बढ़ता तो चार कदम पीछे हो जाता था शिक्षिका ने कहा तब तो स्कूल आना संभव नहीं था। भावित- मेडम जी मैंने अपना मुँह घर की तरफ कर लिया था।

संकलन: जिनेंद्र कुमार जैन, इंदौर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

* खजाना लूटो

खिलाड़ियों की संख्या- 15-30

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- दो दलों की पहचान के लिये एक दल के सब खिलाड़ी अपनी कमीज नेकर से बाहर कर लेंगे। शिक्षक एक रूमाल में कोई सिक्का या पत्थर रखकर उसमें 8-10 गांठे लगाकर रूमाल ऊपर उछालेगा। दोनों दल के खिलाड़ी रूमाल खोलकर वह खजाना प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। इस छीना-झपटी तथा भागदौड़ से सब बार-बार अपने साथ की ओर रूमाल फेंकेंगे। रूमाल खोलकर खजाना शिक्षक के हाथ में देना वाला दल विजयी होगा।

* रेलगाड़ी

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- 10-15 संख्या के दो दल सामने की ओर मुँह करके खड़े होंगे। सीटी बजने पर पहला स्वयंसेवक (इंजन) दौड़कर सामने निर्धारित स्थान तक जाकर वापिस आयेगा। अब उसके पीछे दूसरा खिलाड़ी (डिब्बा) लग जायेगा। वे दोनों फिर यही क्रिया करेंगे। इस प्रकार रेल में डिब्बों की संख्या बढ़ती जायेगी। पूरा काम पहले कर लेने वाला दल विजयी होगा।

* दीवार युद्ध

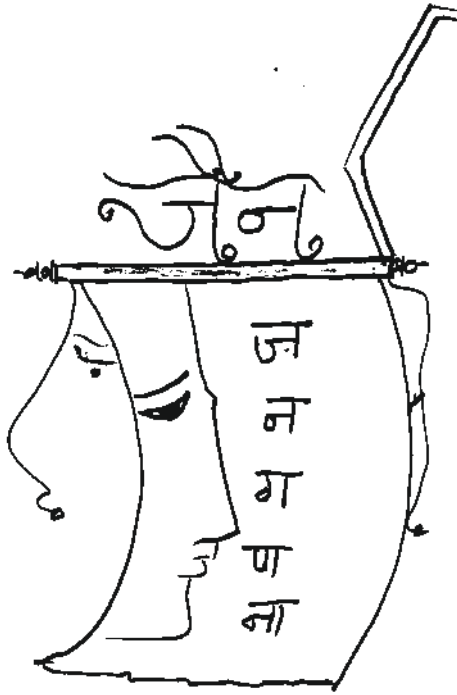
खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- पूर्व खेल की तरह दोनों दल हाथ में हाथ डालकर दीवार बनायेंगे। दोनों की पीठ आपस में मिली रहेगी। सीटी बजने पर दोनों दल एक दूसरे को धकेलने का प्रयास करेंगे। जो दीवार तीन मीटर दूरी तक खिसक जायेगी वह दल पराजित होगा।

बाल कहानी

अनहोनी न होय



वियतनाम के हनोई शहर में बहुमंजिला इमारत के नीचे नुयेन नागास मान अपनी गाड़ी पर बैठा हुआ इंतजार कर रहा था। नुयेन डिलेवरी सप्लाई करने का काम करता था। ऑनलाईन कम्पनी का माल पहुँचाने में उसकी महारथ थी वह अपने मोबाईल पर अंगुलियां चला रहा था और जिसे डिलेवरी देना थी उसको कॉल कर रहा था अचानक एक महिला के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। पहले तो नुयेन ने उस आवाज को अनसुनी कर दिया परन्तु थोड़ी देर बार एक बच्चे की भी रोने की आवाज आने लगी नुयेन ने गाड़ी से बाहर निकलकर देखा कि लगभग 50 मीटर ऊपर एक बच्चा एक छड़ को पकड़े लटका हुआ है उसकी माँ उसे पकड़ने का प्रयास कर रही है परन्तु वह सफल नहीं हो पा रही है फायर बिग्रेड की मदद लेने की उम्मीद की

जाती तो समय गुजर जाता और जब तक फायर बिग्रेड आती तब तक बच्चे का हाथ थक जाता और बच्चा निश्चित तौर पर नीचे गिरकर अनहोनी का शिकार हो जाता।

नुयेन ने अपने इशारों से महिला से कहा आप चिंता न करें मैं हूँ और बच्चे का कैच जरूर ले लूंगा महिला संदेह के झूलने में झूलने लगी अनहोनी टलना निश्चित नहीं हुई कुछ मिनटों तक बच्चा उसी बारहवीं मंजिल तक लटका रहा नुयेन ने आवाज लगाकर जमाकर खड़े हो गये। महिला के आंसु रुक नहीं रहे थे और वह ऊपर से ही अपने बच्चे का भविष्य निश्चित कर रही थी बच्चे का हाथ छूट ही गया एक माँ अपने बच्चे कलेजे के टुकड़े को अपने सामने ही मौत की ओर जाते देख रही थी नुयेन ने दोनों हाथों में बच्चे को झेल लिया और वह मशीहा बनकर सामने आ गया इकट्ठी हुई भीड़ ने खुशी जाहिर करके नुयेन की पीठ थपथपाई और कहा अनहोनी न होय।

संस्कार गीत

संत सूरमा की सेना



क्रांतिकारी सन्यासी गण वन्दे मातरम् गाते थे
भारत माँ चरणों में वे अपना शीश चढ़ाते थे

1.

स्वभाषा स्वराज था जिनका
लक्ष्य बड़ा अभियान था
दिल्ली से लंदन तक गूँजा
इंकलाब स्वर्गान था
भारत माटी पूज्य उन्हें थी
सिर पर सदा लगाते थे

2.

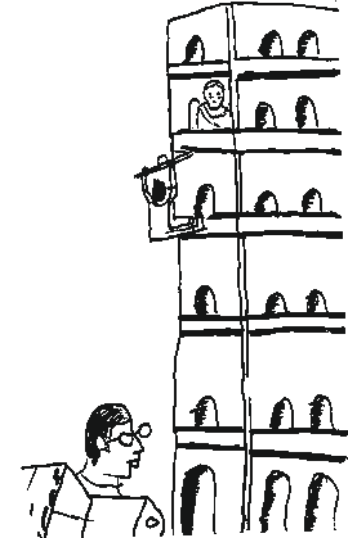
आनंदमठ की अमर कहानी
हमको याद दिलाती है
जब उठ खड़े हुये सन्यासी
गाथा शौर्य सुनाती है
अंग्रेजों ने मुँह की खायी
जब साधु भिड़ जाते थे

3.

सत्ता लोभी व्यसनी नृप ने
संतों के संग कपट किया
सुरा सुंदरी सत्ता पाने
संतों का नहीं साथ दिया
संत सूरमा की सेना से
अंग्रेज खूब भय खाते थे।

बाल कविता

जैन शब्द अनमोल



जैन धर्म का मान बचेगा
जनगणना जब जैन लिखेगा।

पर्व मनाये धर्म बचायें
जनगणना में जैन लिखायें
गोत्र जाति से बड़ा धर्म है
जैन लिखाना परम कर्म है

1 करोड़ हम हैं यह सच
साबित करना होगा यह सच
चूक न जायें, भूल न जायें
धर्म के कॉलम जैन खिलायें
जाति नहीं बस धर्म जैन है
विश्व शान्ति अरू अमन चैन है
जन जन यह गूँजेगा
जैन अब नहीं भूलेगा।

समाचार

समाधिमरण

सुवासरा विस्फुनिया- आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री पद्मकीर्ति महाराज का समाधिमरण 17.06.2022 प्रातः 9.58 बजे सुवासरा में हुआ।

वाराणसी (उ.प्र.)- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका श्री शुभमति माताजी का समाधिमरण 18.06.2022 को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मेदावनी वाराणसी में हुआ।

रहली- श्री पवनकुमार जैन सिंगपुर वाले रहली का स्वर्गवास 13 मई 2022 को हुआ। आप कुछ समय पहले आचार्य श्री दर्शन पूजन का लाभ लेकर तथा एलक श्री सिद्धांतसागर महाराज जी से कुछ विशेष चर्चा करके आने के बाद आपका स्वर्गवास हुआ।

वेदी प्रतिष्ठा

इंदौर- श्री महावीर दिगम्बर जैन चैत्यालय राजमोहल्ला में वेदी प्रतिष्ठा 3 व 4 जुलाई 2022 को प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जिनेश मलैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में प्रतिष्ठित की जायेगी। यह मंदिर श्रीमति मालती देवी माणिकचंद जी पाटनी, श्रीमति अरूणा सुमति लाल, श्रीमति कमला सुशील जी, श्रीमति सीमा सुनील जी पाटनी परिवार के द्वारा बनाया गया था जिसमें वेदी जीर्णोद्धार करके तथा भगवान श्री शांतिनाथ जी, भगवान श्री वृषभनाथ जी, भगवान श्री श्रेयांसनाथ जी की प्रतिमा भोपाल अशोका गार्डन में मुनि श्री उत्तमसागर जी, मुनि श्री कुंथुसागर जी, मुनि श्री पुराण

सागरजी, के ससंघ सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रतिष्ठित होकर विराजमान की जा रही है।

आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी महाराज
ससंघ का मंगल आगमन

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में आचार्य श्री सौभाग्यसागर महाराज ससंघ का मंगल आगमन 04 जून 2022 को हुआ। उन्होंने मंदिर में चलने वाली सभी गतिविधियों का अवलोकन कर सभी कार्यों की प्रवचन के माध्यम से बहुत-बहुत प्रशंसा करते हुये सभी कार्यों सराहना की। तथा ऐसा कार्य चलता रहे इसके लिये आशीर्वाद दिया।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का
50वाँ संयम स्वर्ण महोत्सव एवं श्रुत
पंचमी महोत्सव मनाया गया।

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट इंदौर में श्रुत पंचमी महोत्सव 4 जून 2022 शनिवार मुनि श्री प्रभातचंद्र जी महाराज, मुनि प्रसादचंद्र महाराज जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। जिसमें रमेश जैन क्लर्क कॉलोनी, दीपक जैन परदेशीपुरा, वीरेन्द्र जैन, हर्ष जैन, धर्मेन्द्र जैन, आजाद मोदी, प्रदीप जी टड़ा, आनंद जैन, पाठशाला परिवार, गौरव जैन, भरत जैन स्वर्ण रथ सारथी एवं इन्द्र परिवार बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। **चित्र अनावरणकर्ता-**पुष्पा प्रदीप कासलीवाल, राजकुमार पाटोदी, एम.के. जैन, मनोज बाकलीवाल, राजीव सेठी, धर्मेन्द्र जैन, **स्वर्ण रथ सारथी-**निशांत जैन, नीरज जैन, अमित जैन, रविन्द्र जैन,

अरविन्द्र जैन, सुरेश जैन बैंकवाले, अभिषेक जैन गढ़ाकोटा, विनोद जैन, जितेन्द्र जैन, दीप **प्रज्ञवलन कर्ता:-** कमलेश कासलीवाल, अमित कासलीवाल, हंसमुख गांधी, अनिल जैनको, अक्षय कासलीवाल, **पाद प्रक्षालनकर्ता:-**मुलायमचंद जैन, अभय जैन (सी.ए.), राजेश जैन, प्रियदर्शी जैन, विकास जैन, प्रिजेश जैन, **शास्त्र विराजमान कर्ता:-** डी.के. जैन, अरविन्द्र जैन, मनोज जैन ट्रस्टी, अनिल पांडया, ए.के. जैन, मनीष जैन बीना वाले, आशीष जैन बीना वाले, सुरेश जैन (पथरिया वाले), **स्वर्ण रथ सारथी :-** नरेन्द्र जैन, राजकुमार जैन, राजेन्द्र जैन जैसीनगर, आर.सी. जैन, श्रीमति चन्द्रकांता जैन, श्रीमति सुलोचना जैन, श्रीमति मालती जैन, श्रीमति समित्रा रांवका, शीतल जैन, लाभचंद जैन, उषा जैन, सुरेश जैन, रविन्द्र जैन, सुनील जैन, राजेन्द्र जैन, आराधना कासलीवाल, विनोद जैन

सुखलिया, गजराबाई सुखलिया, नीरज जैन, सुरेन्द्र जैन, रेवतीरंज, पारसचंद जैन विजयनगर, पवन जैन, सुरेन्द्र जैन, राजीव निराला, अंशुल जैन, अनिल बजाज, राजकुमार जैन, ओमप्रकाश जैन, नवीन जैन, ओमप्रकाश जैन, संतोष जैन, शरद जैन, पवन मोदी, डी.के. जैन, श्रीमति सुभद्रा जैन, प्रकाशचंद काला, इन्द्रपाल जी, अनिल जैन, सकलम जैन, अरूण फणीश, नरेश जैन, निलेश जैन, बाबू जैन, अरविन्द्र जैन, अनुभव जैन, संतोष जैन, अभिषेक जैन, पवन जैन, जिनेन्द्र करूणा जैन, विनोद जैन, प्रिंस जैन, शशिकांत जैन, देवेन्द्र जैन, पंकज जैन, महेन्द्र जैन, निलेश जैन, लवर्स जैन, संतोष जैन, राजेन्द्र जैन, नरेन्द्र सेठ, अनिल जैन, प्रणव जैन, राजेन्द्र जैन, कमल जैन, कोमलचंद जैन, बाहुबलि जैन, पदम जैन, अमित गोलू जैन, राजेन्द्र जैन, डॉ. शैलेश जैन आदि ने सौभाग्य प्राप्त किया।

चातुर्मास विशेषांक सूचना

आपके नगर में किसी भी आचार्य/उपाध्याय/साधु/आर्यिका माता जी/एलक जी/क्षुल्लक जी/क्षुल्लिका माताजी का चातुर्मास होना तय हो गया हो तो उसकी जानकारी संस्कार सागर कार्यालय तथा व्हाट्स नम्बर 8989505108 ईमेल आई डी sanskarsagar@yahoo.com पर शीघ्र अतिशीघ्र दें ताकि आगामी अंक चातुर्मास विशेषांक रहता है। इसमें सभी साधु चातुर्मास कहा करें रहें कितने साधु है किसी एक या दो व्यक्तियों का सम्पर्क सूत्र पिनकोड सहित दिया जाता है। अतः उपरोक्त जानकारी देकर अनुग्रहीत करें। इस वर्ष में चातुर्मास के बाद हुई दीक्षाएँ एवं समाधि का विवरण भी शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर

वर्ग पहेली 273

1	2	3	4	5	6	7	8
8				9		10	
11			12	13		14	15
		16					
17	18			19		20	
21			22	23			
	24	25		26		27	28
29		30	31		32		
33			34				

ऊपर से नीचे

1. एक निर्यापक श्रमण का नाम, नन्हें देवरी मुनि -6
2. मात्र केवल सिर्फ -3
3. संगीत का अंग जिसमें मात्राओं की गणना होती है -2
5. दिव्य वाहन, वाहन, हाथी से चलने वाला यान -2
6. शमन/दमन करने वाला -3
7. स्वामी सहित -3
10. स्वामी -2
12. यदि -2
13. कीमत, मूल्य, धन -2
15. झुकना, प्रणाम करना, नमस्कार -3
16. रूपया पैसा, दौलत -2
19. एलक सिद्धांतसागर का पूर्व नाम पुष्प -3
20. सुरक्षा हिफाजत -2
23. नाखून -2
25. शरीर, काया -2
27. दृष्टि -3
28. शोक, गम, दुख -3
30. झुका हुआ, नीचे -1
31. अंधकार, अंधेरा -2

बाये से दाये

1. सभी बराबरी का भाव -3
4. महावीर भगवान का शासन -5
8. भवन, भागार -3
9. रूकना, ठहरना -3
11. मुकुट, किरीट, ताजमहल -2
12. हनुमान जी का शस्त्र -2
14. कहना, बोल, बयान -3
16. धर्म, मजहब -3
17. आसमान, आकाश -3
19. स्मरण, याद करना -4
21. धूल, परागकण -2
22. प्रिय व्यक्ति -3
24. रजनी, निशा, यामनी -2
26. खोदने का भाव -3
29. साधु, ऋषि -3
32. विश्व, दुनिया -3
33. दिनांक, तारीख, चंद्रांश की गणना -2
34. घमंड, अभिमान -2

वर्ग पहेली 272 का हल

1	2	3	4	5	6	7	8
शु	ति	दु	आ	पा	म	र	
7	त	रं	ग	8	9	ज	रा
10	धा	गा	11	वा	म	न	मा
12							त
13	र	यो	ज	न	14	गा	र
15							
16	वि	ग		मा	त		व
17	वि	द्या	सा	18	ग	र	सु
19							र
20	द्या		ग	म	21	रा	ह
22							र
23	घ		र	ता	ज	24	त
25							ज
26	र	ज	ला	ली	मा	27	रु
28							प

सदस्यता क्र.

पता :

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

में रखवाला



नियम

1. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदयुक्त तुकाल कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
2. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
3. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
4. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

चातुर्मास कलश आकृषित डिजाइनों में सरस्ते एवं सुन्दर



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008



हिन्दी मातृभाषा अपनायें विदेशी भाषा हटायें

तोड़ें अंग्रेजी माध्यम का भ्रमजाल
मिलायें मातृभाषा के साथ कदमताल

आपका मूल्यांकन आपके कार्यों,
क्षमताओं, बुद्धिमत्ता
कर्मठता के आधार पर होगा,
भाषा के आधार पर नहीं।
अमित शाह, गृहमंत्री



* विनम्र अनुरोध *

अपने घर में मातृभाषा बोलें
हस्ताक्षर हिन्दी में करें
प्रतिष्ठान की पट्टिका (बोर्ड) हिन्दी
में लगायें अन्यथा मूल से कट जायेंगे।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक

Click पर

www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक : 28/06/2022, पोस्टिंग दिनांक : 03/07/2022